मैथिल भैया करू विचार

मैथिल भैया करू विचार

बद्री नाथ राय 'अमात्य'



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

MAITHIL BHAIYA KAROO VICHAR

Anthology of Maithili Poems by Shri Badri Nath Roy 'Amatya'

ISBN : A/F
दाम : 200/- (भा.रू.)

प्रथम संस्करण : 2023

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
अक्षर संयोजन : डॉ. उमेश मण्डल
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

अभिमत

मैथिली साहित्याकाशमे एकसँ एक नक्षत्र भेलाह जे अपना लेखनीसँ मिथिला-मैथिलीकेँ आलोकित करैत रहला अछि। श्री बद्रीनाथ रायजी मैथिली साहित्यक उदयमान नक्षत्रक रूपमे सामने एला हेन। ओना, श्री रायजीक ई पहिल पोथी छिऐन, मुदा ओ बहुत पहिनेसँ मैथिलीमे कविता, गीत, कथादि लिखैत रहला हेन।

प्रस्तुत पोथीमे कवि बद्रीनाथजी मिथिलासँ जे लोक रोजगारक लेल पलायन कऽ रहल हेन तैपर चिन्ता प्रकट केलैन अछि। एकटा कविताक माध्यमसँ हिनकर कहब छैन जखन हम सभ मिथिलावासी छी तखन जाति-पाति की, सभ एक जाति छी, सभ मैथिल छी। एकटा कविताक मादे कवि मिथिलामे दहेजक खातिर नारीपर भऽ रहल अत्याचारकेँ उजागर केला हेन।

एकटा कवितामे कवि विवाहिता नारीसँ अपन सासुरक हाल आ अपन बेथा अपना सखीसँ कहबै छथिन, देखल जाए-

“की कहियौ बहिना हम

ससुरा के हाल गे।

साउस हमर सूर्पनखा

ससुर हमर काल गे।।”

‘अनाड़ी वर’ कवितामे कवि एकटा विवाहिता युवतीकेँ अनाड़ी आ मूर्ख पति रहलासँ केना सभ मनोरथ जरि जाइ छै, तइकेँ चित्रण केलखिन हेन। जाग-जाग सुच्चा मैथिल जाग कविताक माध्यमसँ कवि सुच्चा मैथिलकेँ ललकारि रहल छैथ। हुनक कहब छैन कतेक दिन सुतबैँ, आबो

तँ जाग आ अपन अधिकार ले। तोरा अपन अधिकारक लेल अपने लड़ए पड़तौ, तब जा कऽ अधिकार भेटतौ। द्रष्टव्य अछि-

“मुँहमे तोरा खुआ देतौ के?
सभ छै अपने भूखल।
नञि खेबही अप्पन हिस्सा त
भेटतौ रूक्खल सूक्खल।।”

‘बेटी बापक सन्ताप’ कवितामे एकटा बापकेँ बेटी विवाहमे की-की फिरीशानी होइ छै तइकेँ वर्णन केलखिन हेन। कविक कहब छैन- बेटीक बाप भेनाइये एकटा सन्ताप छै। निम्न पाँतिकेँ देखल जाए-

“दुष्ट दहेज उपनिवेशमे
हमहुँ छी बेटीकेर बाप।
बेटी जनम लेलक तहियेसँ
सहि रहल छी सभ सन्ताप।।”

‘हम धनि छी प्यासल’ कवितामे कएटा ओहन नारीक बेथाक वर्णन केला हेन जिनकर पति भरल जवानीमे पत्नीकेँ छोड़ि परदेश चलि जाइत अछि आ बहुत दिन धरि पत्नीक सुधि नइ लैत अछि। ऐ पाँतिसभकेँ देखल जाए-

“सावन प्यासल भादो प्यासल,
हमहूँ धनि छी प्यासल।
आब पहुँ जँ नञि घर औता,
यौवन हमरो भासल।।”

के करत मिथिलाक उद्धार कवितामे कविक कहब छैन जे मिथिलामे आब सपूत नहि अछि जे मिथिलाक उद्धार करत। मिथिलाक कला, संस्कृति, आचार, बेवहार सभ विलुप्त भेल जा रहल अछि। केतए गेल ओलक चटनी, केतए गेल अचार आ तिलकोर पातक तरूआ।

‘एतबे अछि अभिलाषा’ कविक व्यंगात्मक कविता छिऐन। ऐ

कविताक मादे कवि वर्त्तमान बेवस्थापर कड़गर चोट केलाह अछि। प्रशासनमे व्याप्त भ्रष्टाचार, शिक्षामे गिरावट, घूसखोरी आ चमचागीरीपर सेहो चोट केला हेन।

पोथीक सभ कविता बेस रूचिगर अछि। कविकेँ बहुत-बहुत साधुवाद। आशा अछि श्री बद्रीनाथ राय जीक ऐगला पोथी सेहो जल्दीए सामने आएत।

नन्द विलास राय

मो. 9931909671

भपटियाही सखुआ

20-05-2023

कविवर बद्रीनाथ राय जीक मादे

कविवर बद्रीनाथ राय ‘अमात्य’ जीके पाँच दर्जन काव्यके मैथिली पोथी ‘मैथिल भैया करू विचार’ मेँ एके शिर्षक कवितासँ अर्द्धशतक धरि देखलौं पढ़लौं। श्रीराय जीक कविता वस्तुत: मंचीय- गेयातत्मक बुझाइछ। मिथिलाक किछु गीतकार अपना अन्दाजमे एहिमे सँ गौउने छथि। हिनक काव्य रचना अत्यन्त सौष्ठव भेल छन्हि। प्रस्तुत पोथी 'मैथिल भैया करू विचार' संग्रहमे भावक अविरल आओर अजस्त्रधारा प्रवाहित भेल य। कलाके विचार भाव नैयका आ मौलिक दृष्टिगत होईछ। हिनक कविताकेँ सम्पुष्टि दैत अनेको कविजनकेँ लघु आ दीर्घाकार कवितासँ मूलभूत तुलना कएल जा सकैछ। पाठककेँ विविध शिर्षकसँ कविता पढ़ैमे आओत , जाहिमे रस अलंकार आ छंद लालित्य बुझाएत। एहि पोथीके हाथ लगेबाक माने भेल जे आद्य:उपरान्त शिघ्रे पढऐय बिना रुकि नै सकैत छी। एहि निहितार्थ वरेण्य साहित्यकार श्री नन्द विलास राय जीक समीक्षात्मक तथ्य सेहो पुष्टि करैत छैक। स्वयं बद्रीनाथ बाबू अपन अभिमतसँ कविताक रचना सन्दर्भमे सांगोपांग व्याख्या कयनहि छथि। कविताक रोचकता सेहो सहेजें बूझिमे आबि जाएत। समसामयिक विषय पर पाँति गढ़ैत रायजी निमग्न भऽ गबैत छथि। यथा पाँति देखल जाऊ-

पालक परम कठोर भेल अछि
मुदा विकासक शोर भेल अछि।
अपने रान्हल तीसी तीमन
नोनगर करूगर जोर भेल अछि।।

मिथिलाक समृद्धि तखने होएत जहन एतुका सर्वहारा वर्गक लोककेँ बेरोजगारी खत्म होइ-

हकन कनइए मिथिला धरती

जनमानस लाचार बहुत छै ।

बाउ विकाश विलम्ब जुनि करियौ

खाली हाथ बेकार बहुत छै।।

मिथिलामे मैथिलीक नामपर किछ जरदगव अपना वर्ग आ जातिक नहि, वरन् बिनु परवाह कयने अपन गोतिया आ गोधिंयापनिक चलाकीसँ एक गुट ठाढ़ केने छैक। ताहिक वर्चस्ववादी संस्कृतिपर व्यंग करैत कवि पाँति लिखने छथि-

माला मंच माइकमे मिथिला

माथमे चाही ललका पाग ।

आब सुधरि जो निर्लज्जा तूँ

गत्तर गत्तर लगलौ दाग ।।

मंच- माइक- माला पहिर खूब नितराइत, यशस्वी बनैत ,दीपके ईजोत पसारबाक आकर्षक पेनी देखू तँ अन्हारे आ हहाकारे केने छै । से व्यक्तिगतो जीवनमे कनेक यश बटोरने रहनाय मनुखता हैत! तेँ कवि कटाक्ष करैत ई पांति देलनि-

लात खाइतमे उमर बितल छौ

गारि सुनैतमे पकलौ केस ।

तन्द्रा के तूँ त्याग पतितहा

देहमे नञि छौ लाजक लेश।।

भारतीय नागरिक केँ विशेष कय लेखकीय काजमेँ लागल कलमवीर केर दू गूट - एक वामपंथ तँ दोसर दक्षिण पंथमे बँटल देखल जाइछ, से हदघरी मानसिकता आधार पर बँटले बुझाइछ। मुदा संतुष्टि कतौ नै छइ? यथा-

राजनीतिक दलदल के कारण

सबहक मनमे रार बहुत छै ।

अपना मनसँ सब सिन्धु छै
देखलहुँ सुख्खल धार बहुत छै।।

मिथिलांचल प्रायः रौंदी (अकाल) आ वाढिमे त्रस्त रहैत छैक। सरकार दिशसँ सरकारी कर्मी आ त्रि-स्तरीय पंचायती राजक जनप्रतिनिधि राहत सूची लाभार्थी लेल बनाबयमे घोर अनियमितता करैत खूब धन डेकारैत छैक। निगरानी जाँच दल सेहो वादमे मालामाल होईछ,आ हाथी तँ दहा जाइछ मुदा चीरै दू बूँन जल बिना बंचित रहि जाइछ। एहि मार्मिक दृश्यके चित्र खींचैत कवि समानताक लेल बेकल देखाईछ। यथा-

चास बास संसाधन रहितहुँ
सब कनहापर भार बहुत छै।
पीपड़ पाखरि के मोजर नञि
छाँवहीनटा तार बहुत छै ।।
छै समाजमे बहुत विषमता
भ्रष्टाचार विकार बहुत छै ।
किछुए के चुनरी मलमल छै
बाँकि लोक उघार बहुत छै ।।

अपन कविताक उपयोगिता मादे कविजी घोषणा करैत छथि। यथेष्ट पढल- लिखल आ अफसर बनल मिथिलाक बेटा जे शहर नगरमे रहि पैघौत झाड़ैत छथि से आब गाम घरक मैथिल सन मैथिली बजनिहार नहि छथि। ओ आब अपन परिबारिक धियापुतासँ अंगरेजीये हिन्दीमे वार्तालाप करैत अपनाकेँ श्रेष्ठ बुझैछ आ मिथिला मंच पर मैथिली लेल नोर बहबैत रंगल नढ़िया बनल देखाईछ,से ऐ पांतिमे स्पष्ट लौकैत अछि-

माँ मैथिली हमरा कहलनि-
जे पुत छथि पढल - लिखल नञि
खूबे ओ देलनि सम्मान ।
पूत हमर जे पढल लिखल छथि

माँ नँय बुझलनि, बुझलनि आन।।

मैथिली साहित्य आन्दोलनमे हिनक योगदान लेल हम अभिभूत छी। दिव्य- दृष्टि मैथिली भाषा पोथीमे सेहो हिनक काव्यके चर्चा हम कयने रही; सेहो हुनक जन्मदिनक सुअवसर पर। इति।।

-लालदेव कामत

लेखक एवं पत्रकार

प्राक्कथन

मैथिली जगतमे एकसँ बढिकय एक साहित्यकार भेलाह, जे मैथिली साहित्यिक विकास लेल अपन लेखनी कैँ गति दैत रहलाह। एहि क्रममे श्री बद्रीनाथ राय ‘अमात्य’ उदीयमान नक्षत्र रुपमे सोझा अयलाह अछि। हिनक कविता बरबरि फेसबुक पर अभरैत रहल अछि। हिनक रचनामे मुख्य रूपसँ मिथिलाक समस्या उजागर होइत रहलनि। कतेको काव्य हिनक व्यंग्यात्मक होई छन्हि, जे पाठक कैँ कविता विधा दिश सहेजें आकृष्ट करैत अछि। प्रस्तुत पोथी ‘मैथिल भैया करू विचार’मे ‘एतबे अछि अभिलाषा’ कथा-कविता मादे श्री रायजी कहैत छथि-

हेहर - थेथर , आंकड़- पाथर
भ्रष्ट शिरोमणि मुखिया भेल ।
सुगरक खुरके पूजा होइए
कुक्कड़क मुँह गमकौआ तेल।।

वर्तमान पंचायती राज व्यवस्थाक जे परिवेश बनल जा रहल अछि, ताहिमे ई कविता रोचक ओ सटीक बुझाइछ।

एकटा कवितामे कविजीक कहब छन्हि, जहन हमसब मिथिलावासी छी, तहन जाति- पाति,धर्म सम्प्रदाय की? सब एके जाति - एके धर्म आ एके सम्प्रदायक छी; सब मैथिल छी। यथा, पाँति द्रष्टव्य-

हम जातिके छोड़ि देने छी
अहूँ जातिके छोड़ू भाय।
आऊ एके पांतिमे बैसि,
भुखल छी? तँ खाऊ मिठाय ।।

कविवर रायजी आत्मकथा नामक कविता मादे अपन जीवनक व्यथा कथा रखलनि अछि, जाहिमे कैंचाक अभावे सोचल लक्ष्य नहि भऽ पबैत छैक! यथा-

अर्थक हीन मनोरथ सबटा

छल सपना सपने रहि गेल।

देखब कहिया दिन सुदिन हम

दग्ध हृदय जरिते रहि गेल।।

अछि द्वेष दंभसँ दुषित समाज

उपहासे मात्र करईए ।

मन मारि अपमान सहै छी

झर - झर नोर बहाए ।।

प्रस्तुत मैथिली साहित्य पोथी 'मैथिल भैया करू विचार' संग्रह'क सब काव्य बेस उपरा-उपरी अछि। आशा अछि पाठककेँ चहटगर लगतन्हि।

कवि श्री रायकेँ बहुत - बहुत साधुवाद, हिनकर अगिला पोथी शिघ्रे सामने आओत एहन आश रखैत छी।

शुभ कामनाक संग

-शम्भू नाथ मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक-कोसी

सन्देश पत्रिका (त्रिमासिक)

अप्पन बात

मिथिलांचलक मधुबनी जिला अन्तर्गत खजौली थानामे एकटा गाम अछि, नाओं छिऐ ‘करमौली। ओही करमौली गामक एकटा किसान परिवारमे हमर जन्म 24-06-1963 कैँ भेल। चारि भाइक भैयारीमे हम दोसर नम्बरपर छी, कहबाक मतलब हमरासँ एक भाय जेठ आ दू भाय छोट अछि। ओना, हमरा चारू भायसँ जेठ एकटा बहिन छथि।

हमर पिताजी स्व. जयदेव राय सातवाँ तक पढ़ल रहथि, जखनकि माए सोलह दूना आठ, यानी बिल्कुल निरक्षर। हमर पिताजी बेस धार्मिक प्रवृत्तिक लोक छलाह। पूजा-पाठमे विश्वास छेलनि तँए प्राय: दू-दू घन्टा पूजा करैत रहथि।

हमरा प्रारम्भिक शिक्षा मध्य विद्यालय कपड़िया (खजौली) सँ प्राप्त भेल। कपड़िया मध्य विद्यालयसँ सातवाँ वर्ग उत्तीर्ण भेला पछाइत उच्च विद्यालय मलहरिया वागनगर (जिला- पूर्णिया)मे आठवाँ वर्गमे नाम लिखेलहुँ। चूकि हमर पीसा स्व. हीरालाल राय मलहरिया वागनगर उच्च विद्यालयक प्रधानाध्यापक रहथि। दोसर कारण ई जे हमर पिताजी हमरा सातवाँक बाद पढ़बैसँ लाचार छलाह तँए हमर पीसा हमरा अपना लग रखि मैट्रिक तक पढ़ेला। पीसे लग रहि मलहरिया वागनगर उच्च विद्यालयसँ मैट्रिक पास केलौं।

मैट्रिक पास केलाक पछाइत इलाहावाद हिन्दी विद्यापीठसँ साहित्य रत्न प्रथम भाग उत्तीर्ण केलौं। 1988 ई.मे हमर विवाह भऽ गेल आ 1991 ई.मे हमर पत्नी द्विरागमन भऽ करमौली आबि गेलीह आ सासुरमे रहए लगलीह।

जीवन यापनक लेल हम सरकारी नौकरीक लेल बड़ परियास केलौं

मुदा सरकारी नौकरी नहि भेटल। पछाइत आजीविका चलाबए लेल कलकत्ता गेलौं। कलकत्तामे कोठी-बाड़ीमे सुरक्षा प्रहरीक काज कऽ गुजर करए लगलौं।

1988 ई.सँ हिन्दी आ मैथिलीमे किछु-किछु तुकवन्दी कऽ कविता लिखै छेलौं। जखन कलकत्तामे रही तँ हमर आलेख सन्मार्ग दैनिक समाचार पत्रमे छपैत छल, ओना रजनीमुख दैनिक समाचार पत्र नागपुरमे सेहो किछु रचना छपल। पछाइत मिथिला दर्पण, पकठोस आदि पत्रिकामे सेहो रचनासभ छपल।

वर्त्तमानमे हैदराबाद-सिकन्दराबादसँ प्रकाशित स्मारिका देसिल बयनामे हमर कविता प्रकाशित भऽ रहल अछि।

2019 ई.मे बेटी विवाहक मादे घंघौर (प्रखण्ड- बाबूबरही, जिला, मधुबनी) गेल रही। ओतए हम अपन सम्बन्धी श्री रामवालक काका ओहिठाम ठहरल रही। एक दिन हम अपन कमीज धोइसँ पहिने कमीजक जेबीमे सँ सभ कागज निकालि चौकरीपर रखि देने रही। दलानक आगाँ चापाकलपर हम कपड़ा धोइत रही, तखने जोरसँ हवा बहल आ चौकीपर रखलाहा हमर सभ कागज उड़िया गेल। श्री रामवालक काका दालानेपर रहथि ओ हमर सभ कागज बिछि कऽ ओरिया कऽ रखि देलखिन। ओइ कागजमे सँ एकटा कागज खोलिकऽ ओ पढ़ए लगलाह। हम कपड़ा धोइत रही। रामवालक काका ओ कागज नेने हमरा लग एला आ हमरा पुछलनि, ई कविता किनकर लिखल छी?

तैपर हम कहलिऐन- अहींक भातीजक लिखल कविता छी।

तैपर ओ बड़ खुश भेला आ कवि सम्मेलन सभमे भाग लेमए लेल कहलनि। तीन दिनक पछाइत जिला पुस्तकालय मधुबनीमे कवि सम्मेलनक आयोजन छल। ओहि कवि सम्मेलनमे हमहूँ अपन कविता पढ़लौं। हमरा कवितापर बड़ थोपड़ी बाजल रहए। ऐगला दिनक हिन्दुस्तान समाचार पत्रमे हमरो नाओं छपल। ऐ बातक सूचना हमरा रामवालक काका फोनपर देलनि। पछाइत कवि सम्मेलन सभमे भग लेमए लगलौं। जखन 2021 ई.सँ पुन: दिल्लीमे रहए लगलौं तँ दिल्लीमे सेहो

आयोजित कवि सम्मेलन सभमे भाग लेबए लगलौं।

हमर कविता सुनि किछु साहित्यकार मित्र, सर-कुटुम आ शुभचिन्तक लोकनि पोथी छपेबाक लेल प्रेरणा देलनि जाहिमे श्रीमान् जगदीश प्रसाद मण्डल, ई. श्री रामवालक राय (घंघौर), श्री नन्द विलास राय (भपटियाही-सखुआ), श्री लालदेव कामत (नौआबाखर, श्री रामश्रेष्ठ राय (घंघौर), श्री राजा बाबू (जबदी), श्री रविकान्त शास्त्री (मंगरौना), श्री वीरेन्द्र कुमार राय (जेलर साहब), श्रीमान् केदारनाथ भण्डारी (भलनी), श्री मूरारी मैथिल मालाकार, श्री रोहित यादव, श्री विन्देश्वर राय विवेकी (नवकरही)क नाओं उल्लेखनीय अछि। हिनका सभक प्रति हृदयसँ आभार, सभकेँ नमन।

श्री उग्रेस राय (करमौली), श्री महेन्द्र राय (लोहना), श्री रामकृष्ण परार्थी, श्री राम नरेश यादव, श्री कमलेश राय (फुलवरिया) आ श्रीमती पूनम झा 'सुधा' सभक सेहो अभारी छी, किएक तँ ई लोकनि पोथी छपेबाक लेल प्रोत्साहित केलनि। हिनका लोकनिकेँ साधुवाद।

अखिल भारतीय आमात्य सुमन्त समाज नई दिल्ली केर नैतिक एवं आर्थिक सहयोगसँ पोथी प्रकाशनक बाट प्रशस्त भेल। सुमन्त समाजक सभ सदस्यक प्रति हृदयसँ आभार, सभ सदस्यकेँ साधुवाद।

श्री नन्द विलास राय (भपटियाही-सखुआ) हमरा पोथीक शाब्दीक अशुद्धि दूर केलनि ताहि लेल हिनका प्रति अशेष साधुवाद।

बद्री नाथ राय 'अमात्य'

मो. 6205190859

स्थान : करमौली

20-05-2023

काव्य-क्रम

एतबे अछि अभिलाषा

देश विकासक नगर समाजक
कथा मार्मिक सुनबै छी।
केलहुँ अछि उपलब्धि हम जे
से सभटा हम गनबै छी।।

हेहर, थेथर, आँकड़, पाथर
चोर-उचक्का मुखिया भेल
सुगरक खूरकेँ पूजा होइए
कुकुरक मुँह गमकौआ तेल।

कनहा कुत्ता प्रतिनीधि अछि
गिद्ध बिलाइ विचारक
हरियर-हरियर फसल चरैए
साँढ़ समाज सुधारक।

ने पौरुष आ ने पग पथपर
राजनीति अछि स्तर हीन
सत्ता सुन्दरी विलासितामे
भाँग खा सुतल अछि नीन।

सोलह सिंगार कुतिया मुख मण्डल
आँखिमे काजर लाली ठोर
अंग प्रदर्शन करैत चलैए

ऐंठ नगरमे पहीरि पटोर।

साँढ़ पहिरने खादी कुर्ता
कुम्भकरण सन ठेकैर रहल अछि
जिन्दापर अधिकार ओकर छै
मुर्दा खाकऽ अकैर रहल अछि।

कौआ-मेना शिक्षक भेल अछि
गिद्ध सियार अधिकारी
शिक्षा क्षेत्रकेँ चरलक सभटा
भ्रष्ट साँढ़ सरकारी।

अर्थेटा सँ छैन अपेक्षा
कहबै छैथ अध्यापक
ज्ञान अधुरा बाँटि रहल छैथ
नहि विचार छैन व्यापक।

चोटी चानन हकन कनैए
दाढ़ी बैसल कोरामे
राम रहिमक राजनीति अछि
लागल लोक निहोरामे।

मुक्ताचारी गगन विहारी
वाहन व्योम बिहारमे
भ्रष्ट शिरोमणि ऊँच्चासनपर
बैसल अछि सरकारमे।।

जाति धर्म आ भाषा क्षेत्रक
जन-जनपर अधिकार जमौने
कारण एतबे हम मूर्ख छी
प्रतिनीधि परिवेश घिनौने।

प्रतिनिधि पतित बनि बैसल
आँखिमे हुनका मोतियाबिन्द
नैतिकताकेँ बेचि खेने छैथ
सुतल छैथ कुम्भकर्णक नीन।

चौंसठ आवरण अंग प्रदर्शन
विषवाला सन बनि घुमैए
प्रणय घड़ीमे प्रणय निमंत्रण
कुत्ताकेँ ललकारैत घुमैए।

मन्दिर-मस्जिद केर झगड़ामे
विद्या-वैभव भेल समाप्त
भ्रष्टाचारक मेघ लगैए
सगरो अछि अन्हारे व्याप्त।

अन्हरिया केर जन्मल बालक
अन्धकारमे करैए खेल
अन्हरियाकेँ पूजा होइए
बिनु बाती दीपक ओ तेल।

अर्थप्रतिष्ठित अर्थक भूखल
पौरुषकेँ ललकार दैत अछि

हम यदि किछु बाजए चाही
नहि बाजक अधिकार दैत अछि।

जनम-जनमक भूखल-प्यासल
प्रतिनीधि और पंच बनैए
नंगा ओ भीखमंगा मिलिकऽ
बाढ़िमे व्योम बिहार करैए।

हमर घर अन्हराक राजमे
अछि इजोतक आशा
कहिया देखब पूर्ण चन्द्रमा
एतबे अछि अभिलाषा। ❑

पृथक देह अछि माइ

हमर रक्त मिथिला पॉजीटिव
अहाँक रक्त की?कहू यौ भाइ
अहूँक रक्त जँ हमरे सन के
तखने पियब पिया देब चाय।।
हम जातिकेँ छोड़ि देने छी
अहूँ जातिकेँ छोड़ू भाइ।
आउ एके पाँतिमे बैसी
भूक्खल छी? त खाउ मिठाइ।।
हम मिथिला केर रंङ घोरै छी
उज्जर केश करा देब डाइ।
अहींक संग सम्बन्ध सनातन

पृथक देह अछि; एक्कहि माइ।।
अप्पन हिंस्सा के नञि छोड़ब
अनकर हिस्साकेँ जुनि खाइ।
जे जमीन पहिने भेटल छल
से जमीन नञि भेटत भाइ।।
मिथिला राज ओना नञि भेटत
हमर पैरमे किएक बेमाइ?
हमर बेमाइ केर की दबाइ छै?
सेहो निदान किछु खोजियौ भाइ। ❑

चोरे सभ मुँहजोर भेल अछि

कनिते-कनिते भोर भेल अछि
जीवन यौवन थोड़ भेल अछि।
पेय हमर निज नोर छेलै से,
सेहो आब इनहोर भेल अछि।।
चोरे सभ मुँह जोर भेल अछि
हमरे कारी ठोर भेल अछि।
चोरबा हमरे नोर पीबिकऽ,
देखियौ बहुते गोर भेल अछि।।
वीर पुरुष रणछोड़ भेल अछि
कहू केहेन गठजोड़ भेल अछि।
पौरुष जे हथियार हमर छल
सेहो आइ कमजोर भेल अछि।।
पालक परम कठोर भेल अछि
मुदा विकासक शोर भेल अछि।

अपने रान्हल तीसी तीमन
नोनगर करुगर झोर भेल अछि।।
सेवा निष्ठा त्याज्य भेल अछि
शकुनी केर साम्राज्य भेल अछि।
साक्षी रखलहुँ पंचतत्व के
हमर अधोगति भाग्य भेल अछि।।
पामर पावन पूज्य भेल अछि
ज्ञानक पीठ अशुद्ध भेल अछि।
हमरा तँ अनहार लगैए
वंचक लेल सायुज्य भेल अछि।।
कर्म हमर किछु हीन भेल अछि
तँए नियति आइ क्षीण भेल अछि।
भ्रष्टाचारक भीष्म पितामह
पीन आओर पाठीन भेल अछि।। ❑

हे जननी जनम कथी लेल देलिऐ

हे जननी जनम कथी लेल देलिऐ
जीवन नोरे बितलै ना...
रंग बीच बेरंगे रहलौं
माइक माया नगरी।
जीवन बितलै नोरे हमरो
नोर भरल अछि गगरी।।
जीवन कोरे बितलै ना...
हे जननी जनम कथी...
श्मशान सन घर आँङनमे

दीप नञि जरलै मैया।
डूबलै नैया मझधारक बीच
नञि पतवार खेबैया।।
आश अंङोरे जरलै ना...
हे जननी जनम कथी...
दया करू हे माए जग जननी
हम छी प्यासल भूखल।
दुखक दुपहरियामे अछि हमरो
देह टटाकऽ सूखल।।
समय अघोरे बितलै ना...
हे जननी जनम कथी...। ❑

झरकल मुँह झाँपिकऽ राखू

सम्मानक सम्मान क्षीण भेल
मैथिली मैथिला छोड़िये देब।
सम्मानो अपमानित होइए
हम माथा निज फोड़िये लेब ।।
झरकल मुँह झाँपिकऽ राखू
हम कारीखसँ ढ़ौरिये देब।
माला मंच माइक धरि मिथिला!
हम रिवाज के तोड़िये देब।।
पहिरि पाग घाघ जुनि बनियौ
हम भंडार्कँ फोड़िये देब।
सम्मानक सम्मान बचबियौ
हम नञि ओहिना छोड़िये देब।।
समयक शिलालेखपर लिखल

हाथ जोड़ै छी पढ़िये लेब।
हमर बिरोधक स्वरकेँ बुझियौ
आब हलाहल घोड़िये देब।। ❑

फैशन

कनिआसँ बतियाइत रही हम
मन मुदा फगुनाएल रहय।
सासुरसँ सरहोइजक लिखल
चिट्ठी एकटा आएल रहय।।
चिट्ठीमे सम्वाद लिखल छल
मनक भेद विवाद लिखल छल।
दुभि बाटमे जन्मल पाहुन
शीघ्र आउ उपराग लिखल छल।।
कनिञा कहलनि हम छी सीता
नैहर लेल तरसै छी।
हम कहलियनि हम राम नञि
चुट्टी देखि डरै छी।।
अहाँ राम नञि तँए मुदा की
हम जिन्स पहिरै छी।
जाँघ नितम्वपर फाटल जे छल
फैशन वला तकै छी।।
फैशन देखि लोक नञि थुकलक
फैशन थिक बेकारे।
शिक्षा के किछु मोल रहल नञि
यौवन रहल नचारे।। ❑

हम मैथिल छी

फ्रेंच कटिंगकेँ दाढ़ीपर छी
चानन ठोप लगौने।
बापक बुरिबक बेटा हम छी
आँगन घर घिनौने।।
हम मैथिल कहबै छी
हम ठिकेदार छी।
धोती पहिरक लुरि रहल नञि
हम छी मैथिल ज्ञानी।
तइयो हम मैथिल कहबै छी
काटि रहल छी चानी।
हम निर्लज बेसी छी।
चाउमीन चाटै छी बर्गर
मधुर मैथिली खट्टा।
संस्कार विचारकेँ बेचलौं
नित्य लिखै छी चिट्ठा।।
दागल साँढ़ बनक लेल।
नित्य हम मंच सजाबी।
अंङरेजिया टोपी पहिरै
पागक मान घटाबी।
संस्कारके पितृमेध कए
मैथिल श्रेष्ठ कहाबी।।
हम गौरवे छी आन्हर।
बाँचल गौरवेटा अछि।

पेट पहाड़ भाव अछि मेवा
फुसियाँहीक सेवक।
सरिपहुँ बात कहै छी मैथिल
हमरा अछि किछु लेबक।।
केकरो कहबै टा नञि।
बात अपने तक राखब।
रिंकी पिंकी पुत्री सभ छथि
पहिरकऽ घुमथि जींन्स।
पुत्र हमर छथि पाग बचौने
नाम जिनक छनि प्रिन्स।।
हम की बुरिबक छी यौ
लाजक काज नञि कनिञो।
धोतीपर आय जिन्स चढल अछि
सारीपर सलबार।
कपटी कामी क्रोधी के भेल
मिथिलामे सरकार।।
बात हम सत्य कहै छी ।
चश्मा लगाकऽ देखू।
सभकेँ सभ छथि ठकैमे लागल
तइमे हमहुँ शामिल।
मनक बात कहै छी मैथिल
हमही टा छी काबिल।।
बात मानहि टा पड़त
अन्यथा दीप मिझा देब।।। ❑

बनलो बात बिगड़ि रहलैए

कहू हमर मिथिलावासी जन
किएक पलायन बढ़ि रहलइए।
राजनीति निर्लज्ज भेल अछि
मिथिला कहाँ सुधरि रहलइए
दागल साँढ सभ ढेकरि रहल अछि
विष केर गाछ मजरि रहलइए।
ईर्ष्या द्वेष आओर द्वन्द्व द्विगुण भेल
सगरो आगि पजरि रहलइए।।
मानव केर मन मैल बहुत भेल
दानव राज पसरि रहलइए।
मानव मनमे दानव पैसल
जातिवादमे जरि रहलइए।।
बुधिजीवी केर तपैप तर्कसँ
बहस विवादे बढ़ि रहलइए।
भेल विषाक्त माटि मिथिला केर
सगरो साँप ससरि रहलइए।।
अन्न विषाक्त भेल मिथिला केर
खाद्य अखाद्य उपजि रहलइए ।
आम गाछमे बीया बबूरक,
आमक बदला फरि रहलइए।।
कोयली किए दूतकारल जाइए
गामक गाम उजरि रहलइए।
स्तर उच्च करी चिन्तन केर
बनलो बात बिगड़ि रहलइए।। ❑

एकटा बात पूछै छी मैथिल

एकटा बात पूछै छी मैथिल
तन-मन हमर घवाह कोना भेल?
चित चंचल मन व्याकुल हमरो
पोसल कुकुड़ कटाह कोना भेल?
सत्य न्यायकेर संभाषक छल
तखन एतेक फुसियाँह कोना भेल?
रक्षा लेल हम कुक्कुड़ पौसलहुँ
कहु कृतघ्न कटाह कोना भेल?
हृष्ट पुष्ट देखि कऽ पोसलहुँ
कहू तँ भाइ! रोगाह कोना भेल?
बिसरि गेल दायित्व अपन ओ
मालिकपर खिसियाह कोना भेल?
सेवाक अवसर मङलक देलिऐ
कुक्कुड़ तखन विषाह कोना भेल?
अहंशाहसँ शहंशाह भेल
हमरे ऊपर भुकाह कोना भेल? ❑

मैथिल भैया करू विचार

मनक मर्म मिथिला वासीसँ
सुनबै छी सरकार।
नञि सपूत मिथिलामे रहलै
के करतै उद्धार।।
मैथिल भैया यौ,

आबो करियौ सक्षम उचित विचार।
नारीक शक्ति स्वरूप के देखियौ
घर -घर अछि लाचार।
दुष्ट दहेजक कारण नारी
सहइए अत्याचार।।
मैथिल भैया यौ
मनमे रखियौ आबो श्रेष्ठ विचार।
धोतीपर जिन्स चढ़ल अछि
साड़ीपर सलबार।
कपटी कामी-क्रोधी के भेल
मिथिलामे सरकार।।
मैथिल भैया यौ
मनमे राखब उत्तम श्रेष्ठ विचार।
रसगुल्लापर माछक कुटिया
मैथिल के संसार।
बरियातीक लेल खसीक जान जाए
इ नञि शिष्टाचार।।
मैथिल भैया यौ
आबो करियौ सक्षम उचित विचार।
घृतक नाम नञि; दही लुप्त भेल
पापड़ आओर अँचार।
ओलक चटनी हकन कनइए
तिलकोरक धिक्कार ।।
मैथिल भैया यौ...
कुटिया बुट्टी भक्ष जिनक छनि
छथि ओ महिषासुर।
सिंहवाहिनी माता दुर्गा

औती आब जरूर।।
मैथिल भैया यौ...
बहिन जानकी जागू सीता
जग-जननीक अवतार।
नारी भ्रूणक हत्या होइए
मिथिलामे भरमार।।
मैथिल भैया यौ... ❑

सगरो पुष्पित अछि विष वेल

बहिन यै एकबेरि पुनि अबियौ
जनक नगरियामे।
मिथिला डुमल अन्हरियामे ना।।
बढ़लै दुष्ट दहेजक लोभी
सत्ता कपटी कामी-क्रोधी।
सभ केओ लिप्त भेल अछि
गणिका आओर छुतहरियामे।।
मिथिला डुमल...
सगरो चोर भ्रष्ट बटमार
होइ छै रौदी बाढ़ि सुखाड़।
सौंसे काँटे पसरल मिथिला नगर डगरियामे।।
मिथिला...
कृषकक पैर गड़ल अछि कील
खोलियौ कल करखाना मील।
होइ छै नित्य पलायन पेटक लेल शहरियामे।।
मिथिला...
भरल अछि क्रोध विरोध प्रतिशोध

दियौ दिव्य ज्ञानकेर बोध।
मिथिला फँसलै जाकऽ
उर्मि बीच लहरियामे।।
मिथिला...
नञि अछि मिथिलामे रोजगार
कुण्ठित कलुषित दूषित विचार।
सूतल कालनेमि सिंहासन उँच्च अटरियामे।।
मिथिला...
सगरो पुष्पित अछि विष वेल
रावण सिंहासन अछि भेल।
सत्ता शयन करइए स्वर्ण
सोम खड़खड़ियामे।।
मिथिला...। ❑

मिथलामे सरकार कहाँ छै?

मिथिलामे सरकार जरूरी
मिथलामे सरकार कहाँ छै?
बदलक छै सरकार जरूरी
मिथिलामे रोजगार कहाँ छै?

बदलब अपन विचार जरूरी
बाँचल आब बेवहार कहाँ छै?
सूतलि अछि सरकार निन्नमे
बदलक लेल तैयार कहाँ छै?

अगड़ा पिछड़ा कहिया तक इ?
पिछड़ो के रोजगार कहाँ छै?

सत्य बात कहिया स्वीकारत?
नैतिक धर्म विचार कहाँ छै?

संविधानमे शपथ कथिक लेल?
आमजनक अधिकार कहाँ छै?
नेता नीति नियतमे अन्तर
बाँचल इमानदार कहाँ छै?

अगड़ा पिछड़ाकेँ लड़बइए
अपन स्वार्थ टा सिद्ध करइए।
पकड़लियै कमजोर नब्ज हम
समतल पुष्ट विचार कहाँ छै?

झंडा उघि रहल अछि बहुतो
मुदा लोक दमदार कहाँ छै?
कथनी करनी एक करत से
केकरो ई दरकार कहाँ छै? ❑

मिथिलाक गति

बाउ विकास कने जल्दी अबियौ
मिथिलामे अनहार बहुत छै।
बेरि-बेरि हम चिट्ठी लिखलहुँ
अबियौ आब दरकार बहुत छै।।
हकन कनइए मिथिला धरती
जनमानष लाचार बहुत छै।
बाउ विकास विलम्व जुनि करियौ

खाली हाथ बेकार बहुत छै।।
नञि वैद्य, नञि हस्पताल छै
बौआ हमर बिमार बहुत छै ।
हमर करेज ठण्ढ़मे ठिठुरल
वस्त्रहीन छी जाड़ बहुत छै।।
चास बास संसाधन रहितहुँ सभ
कनहापर भार बहुत छै।
पीपड़ पाखरि के मोजर नञि
छाँवहीनटा तार बहुत छै।।
छै समाजमे बहुत विषमता
भ्रष्टाचार विकार बहुत छै।
किछुए के चुनरी मलमल छै
बाँकी लोक उघार बहुत छै।।
राजनितिक दलदल के कारण
सबहक मनमे रार बहुत छै।
अपना मनसँ सभ सिन्धु छै
देखलहुँ सूखल धार बहुत छै।।
शब्दक ज्ञान नञि रहलै केकरो
कहबै साहित्यकार बहुत छै।
महाअराजक विविध क्षेत्र
चलबक लेल सरकार बहुत छै।।
हमरो आश निराश करब जुनि
टूटल अंगक हाड़ बहुत छै।
मिथिलामे रोजगारक कारण
ओछ नीच बेवहार बहुत छै।।
दिन देखार आउ बाटमे
वंचक आओर बटमार बहुत छै।

आश लगौने बैसल छी हम
भूजक लेल कंषार बहुत छै।। ❑

मैथिलसँ अपील

सुनू शिष्ट मैथिल ज्ञानीजन
सभ मैथिल के झाड़ि कहै छी।
ईर्ष्या, द्वेष आ द्वन्द्व द्विगुण भेल
हम धर्मक लेल मारि करै छी।।
अश्लीलता आओर अंगप्रदर्शनकेँ
मिथिलामे नारि कहै छी।
अछि विकास नञि; बहइए पछबा
सांस्कृतिक ह्रास बिहारि कहै छी।।
खण्ड विखंडित मानवता अछि
हम लकीर के पारि कहै छी।
परसि रहल अश्लील ज्ञान जे
ओहि विकास के गारि पढै छी।।
संस्कारहीन शिक्षा दामी
हम धोती के फारि कहै छी।
अगड़ा पिछड़ा छोड़ि दियौ सभ
मैथिल के ललकारि कहै छी।। ❑

दहेजक लोभी

बाप छै दहेज लोभी
बेटा औनाइत छै।

गाम-गाम विवाह लेल
वर ढहनाइत छै।।
लेतै दहेज ढाकी
छीटाक पेन कटैत छै ।
आँखिमे नञि निन्द
मुदा सपना देखैत छै।। ❑

जीवन भेल पहाड़

सुन्दर सजलौं कए श्रृङार
गांवमे हँसिकऽ देलउ हकार।
रौली माथ सजाओल
कान युगलमे साज गे।।
यौवन अछि उजियार गे ना...।
कुन्तल कामक लेल ललकार
मनमे कोमल कमल विचार।
पवन आइ परसि रहल छै
प्रेम पुष्प आओर हार गे।।
नारी हम उपहार गे ना...।
क्षण क्षण आशा के संचार
पहुँ यौ जल्दी लाउ कहार।
नहिरा नञि भाबइए
जीवन भेल पहाड़ गे।।
प्रेमक कुन्ज विहार गे ना...।
हमर अछि सरल सौम्य बेवहार
तहिना अंगक शिष्टाचार।
मटकी मारि रहल छल

निर्ममतासँ मार गे।
मनुञा पंच मकार गे ना...।
कामिनी कोमल सन सुकुमारि
मनमे फाटल जेना दरारि।
पहुँ आइ आबि रहल छथि
सभ रोगक उपचार गे।।
हर्षित नगर जबार गे ना।
नित्य हम भोरे उठब नहाएब
गीत सभ पंचम सुरमे गाएब।
गे बहिना प्रीतम पावन परमेश्वर अवतार गे।।
जीवन के छथि सार गे ना...। ❑

सासुरक हाल

की कहियौ बहिना हम
ससुरा के हाल गे।
साउस हमर सूर्पनखा
ससुर हमर काल गे।।
गोतनी छै गोर मुदा
गौरवे छै आन्हर।
ढेकरइए साढ सन
नह जेना नाहर ।।
ननदी नटिनिया बड़
बजबै छै गाल गे।
साउस हमर...
देवर छै गोबर सन
कोयला सन काया।

भैंसुर छै भैंसा सन निर्लज बेहाया।।
कंठी पहिरी करै कौआ हलाल गे।
साउस हमर...
बाबू दहेज देलनि किनला अनाड़ी।
बुझए नञि बात बरद अवगुण छै भारी।।
कोठी छै ढन ढन होइ भूख हड़ताल गे।
साउस हमर...
घरमे नञि चिक्कस
नञि कोठीमे चाउर छै।
बारीमे ओल बहुत
उपजल खम्हाउर छै।।
नोरेमे तरुआ तरै छी
लाल लाल गे।
साउस हमर...
सरपंचो सासुर के
मौगा छै मुखिया।
पेटु प्रमुख आओर
डीलर छै दुखिया।।
मेम्बर के पेट जेना
टंकी विशाल गे।
साउस हमर...
वर हमर बुरिबक सन
फड़ महकारी।
भेलै विवाह देख
कोठा अटारी।।
बिड़रल बेवहार हुनक
तेकरे मलाल गे।
साउस हमर...। ❑

सभटा दुख दहेजक कारण

गे बहिना वर हमर
बड़ बुरिबक आओर बकलेल छै
सासुर सेन्टर जेल छै ना
देवर चारू काच कुमार
ससुरक साँप सनक फुफकार।
ननदी नाक कटाकऽ
नङटिनीया सन भेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल छै ना...
बर्तन मजिते देह खियाएल
साउसक बातो बेस पिजाएल।
धनि ओ जुन्ना सन के ऐठलि
आओर विष वेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल...
घरमे डर लगैए भारी
लागल नञि छै फटक केबारी।
सभटा दुष्ट दहेजक कारण
गड़बर भेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल छै ना...
ससुरक जेठ भाइ मुँहझौसा
फूलल बेङ सनक अछि ढौसा।
अगुआ आगि लगाकऽ
सारामे सूति गेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल...।
मरए वरक बाप जे लोभी

ओ छथि देवक वेद विरोधी।
स्रष्टा सृष्टी केलनि गड़बर आओर बेमेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल छै ना...। ❑

अनाड़ी वर

गे बहिना वर हमर बड़ बुरिबक आओर अनाड़ी छै,
मूर्ख शिरोमणि कारी छै ना।...
दुष्ट दहेजक हम छी मारल
यौवन जिबिते गेलै जारल।
बुरिबक बात नञि बुझए
बापक आज्ञाकारी छै।।
मूर्खशिरोमणि...
एक तँ गोबर के छै चोत
हम छी लाजे लाहालोट।
लाजक बात की कहियौ
नञि पुरूषे नञि नारी छै।।
मूर्खशिरोमणि...
यौवन छिन्न भेल निस्तेज
फाटए कोमल कोढ करेज।
बुझए प्रणय निवेदन के नञि
पैघ बीमारी छै ।।
मूर्खशिरोमणि...
कहितो लाज लगैए भारी
अकिल के खोलए नञि अलमारी।
बरही बिना ओजारक
बुधिक बन्द केबारी छै।।

मूर्खशिरोमणि...
करबै केकरापर हम आश
बाहर पवन बहै उनचास।
केकरा कहबै मनक बतिया
बड़ लाचारी छै।।
मूर्खशिरोमणि...
जहिना झरकल सन छै देह
हमरो जरलै सख सिनेह।
विद्या पढने एक्कहि मात्र
मुदा भैंसबारी छै।।
मूर्खशिरोमणि...
शिक्षा पहलामे अछि फेल
हमरा चिन्हलक नञि बकलेल।
नहिरा नीक लगैए
रहै जेना कुमारी छै।।
मूर्खशिरोमणि...
पौरुष रखने नञि जरलाहा
बथुआ साग सनक नरमाहा।
यौवन धधकि रहल अछि
हमरा संग लाचारी छै।
मूर्खशिरोमणि...। ❑

भव्य दिव्य अछि भाल

मिथिला जेकर अपन छै
ओकरेमे हम साटब।
रक्ष भाव जे रखने मनमे

पैर ओकर हम काटब।।
ज्ञानक गरिमा हम जनै छी
तँए आइ मैथिल कहबै छी।
हमरे मिथिला हमरे धरती
हम उपज के फाँटब
मिथिला...
बण्ठा भाइसँ लेब विचार हम
आओर लोरीकसँ लाठी लेब।
दीनाक देल इजोतक दर्शन
हम समाजमे बाँटब ।।
रक्ष भाव...
ज्ञान सुधामयी निर्मल मिथिला
भव्य दिव्य अछि भाल।
जाति धर्म के भेद के भेदब
आओर खाइध के पाटब।।
मिथिला...
मिथिला के जे बाँटि रहल अछि
देखियौ हमरे डाँटि रहल अछि।
हेतै विकास मिथिला धरतीकेर
बैसि विचार के बाँटब।
रक्ष भाव...
मिथिला के हम क्रान्तिदूत छी
घेरने रोग बिमारी,
एहि अनहारमे चाही हमरा
वैचारिक चिनगारी।
गली गली अनहार घरमे
चन्द्र सूर्य के साटब

मिथिला...
जे हमरा बुरिबक बुझइए
बुझियौ अपने पैर कटइए।
आब चलाकी मुदा नञि चलतै
अंकुशसँ हम आँकब।।
मिथिला...
सुख शान्ति समृद्धि मनोहर
हम समाजमे आनब।
बहुत ठकेलहुँ फेर ठकाएब नञि
आब आगि नञि पाकब।
मिथिला...
हमरा मिथिला राज नञि चाही
भेटत तँ विधिवत् हम लेब।
हम्मर हिस्सा हमरा चाही
नञि सुनब हम डाँटब।।
मिथिला...
वैचारिक कोमल किसलयसँ
हम वैचारिक आगि जराएब।
बहिन चनैनिकेर खोंइछि भरब हम
सलहेशक पौरुष हम पाएब।।
अवर प्रवर के मैथिल बुझियौ
केकरो नञि हम छाटब।
मिथिला...। ❑

गत्तर गत्तर लगलौ दाग

तूँ निर्लज्जा असली मैथिल!
कहिया के तूँ मैथिल? बाज ।
पेटे तोहर पहाड़ लगै छौ
नञि गत्तरमे कनिञो लाज।।
नैतिकता सिद्धान्त ताकपर
छिना जेतौ नकली खतियान।
तूँ समाज आओर राष्ट्र विरोधी
अवगुण केर तूँ खान महान।।
माला मंच माइकमे मिथिला
माथपर चाही ललका पाग।
आब सुधरि जो निर्लज्जा तूँ
गत्तर गत्तर लगलौ दाग।।
तूँ ही एकसर असली मैथिल
बाँकी की वनगदहा!
तोरा लेल के बुरिबक रहलै?
के उघतौ हरलदहा? ❑

जाग-जाग सुच्चा मैथिल जाग

गहुमन बनल महान मैथिल अछि
सुच्चा मैथिल सूतल।
बेरि बेरि हम पूछि चुकलियै
केकरासँ अछि रूसल।।

कहिया ई जागत घरघुसना
लाज कहाँ छै गत्तरमे।
एखनो नञि बुझै छै अन्तर
गदहा घोड़ा खच्चरमे।।

बास डीह बन्हकी रखने अछि
वंशज जेतै निखत्तरमे।
वंचक के बान्धव बुझइए
बाजत की?प्रतिउत्तरमे।।

लात खाइतमे उमर बितल छौ
गारि सुनैतमे पकलौ केश।
तन्द्रा के तूँ त्याग पतितहा
देहमे नञि छौ लाजक लेश।।

मुँहमे तोरा खुआ देतौ के?
सभ छै अपने भूखल।
नञि खेबही अप्पन हिस्सा तँ
भेटतौ रूक्खल सूक्खल।।

गहुमन के थुरब आओर थकुचब
अछि उपचार जरूरी।
सुच्चा मैथिल निर्लज्जा तूँ
फोड़ि ले हाथक चूड़ी।। ❑

बेटी बापक सन्ताप

सुनू शिष्टजन कन्यादानक
कथा कारुणिक सुनाबै छी।
बेटीक बाप बनइए शापित
निज अनुभव हम बताबै छी।।

दुष्ट दहेज उपनिवेशमे
हमहुँ छी बेटीकेर बाप।
बेटी जनम लेलक तहियेसँ
सहि रहल छी सभ सन्ताप।।

सक्षम वर खोजैमे फाटल
जे जूता छल जीर्ण खियाएल।
कुर्तामे चिप्पीपर चिप्पी
बेरि -बेरि छल सेहो सियाएल।।

बाट चलैमे ठेस लगै छल
मन करै छल कानी।
कोन पाप कहिया हम केलहुँ
से किछुओ नञि जानी।।

नोर-नयनमे कनैत आत्मा
सहै छलहुँ नगरक उपहास।
श्रेष्ट -शिष्ट सभ कोनटा धेने
नगरमे दुष्टक बेसी बास।।

बेटी हमर हम सन्तापित
कन्यादानक चिन्ता खास।
घटक मुँहपर थुकि दैत छल
नञि छल खेती किछुओ चास।।

नगरक लोक निरर्थक काबिल
माङै छला दलाली।
चित चिन्तित मन व्यथा वेदना
जेब रहै छल खाली।।

वरक बाप अर्थक भूखल जे
मारि लातसँ केलनि कात।
बहुतों घटक देहपर थुकलनि
तखनोधरि बनल नञि बात।।

हमर नोरमे तरलनि तरुआ
गृहिणी नोरसँ छौंकलनि दालि।
बेटी देखि नोर झहरै छल
कतेक दिन कहु राखब टालि।। ❑

आत्म कथा

अर्थक हीन मनोरथ सभटा
छल सपना सपने रहि गेल।
देखब कहिया दिन सुदिन हम
दग्ध हृदय जरिते रहि गेल।।

छल द्वेष दंभसँ दूषित समाज
उपहासे मात्र करइए।
मन मारि अपमान सहै छी
झर्झर नोर बहइए।।
हम समाजक व्यंगात्मक
सम्बोधन सभ स्वीकार करै छी।
केओ बुझइए पिलिया कुकुड़
तेकरो अंगीकार करै छी।।
छी समाजमे गौण-मौन हम
गुजर करै छी खखरीसँ।
गाँधी वस्त्र बुरिबक बुझइए
डर लगैए बकरीसँ।।
पौरुष-पैर पाँखि अछि काटल
हाथ हथौड़ीसँ थुरल।
दगाबाज सभ दर्दे दइए
स्वाभिमान सेहो चुरल।।
वस्त्रहीन छी देह उघार अछि
सच पूछी दरकारो नञि अछि।
मंङलासँ के देत दयालु
हमरा लेल सरकारो नञि अछि।।
अपन नोर अपने पोछै छी
जे पोछत से माङत आँखि।
बन्द करत पिंजड़ामे पहिले
उड़लापर काटत ओ पाँखि।।
एहनो लोक भेटला समाजमे
महाप्रतिष्ठित आओर महान।
हमर आँखि हमरासँ छिनला

बादमे देलनि चश्मा दान।।
शब्दक हम छी कृषक अनाड़ी
नञि उपजइए मरुवा धान।
छी विचारमे बारूद भरने
सुनक लेल नञि सक्षम कान।।
नञि पौरुष नञि पाग माथमे
छी समाजमे स्तरहीन।
हँसी हमर अछि बन्हकी लागल
लए छी साँस बसातो कीन।।
भूखल नञि हम धन सम्मानक
भूखल छी हम स्नेहक।
पलटि क पहिरै छी हम गुदरी
फाटल अपने देहक।।
जीवन भरि पतझड़मे रहलहुँ
नञि वसन्तकेर दर्शन भेल।
धरती आ आकाश सुखल अछि
मधुमासो सुखले रहि गेल।।
जेबीमे अछि स्वर्ण निष्क नञि
झोरीमे अपमान भरल अछि।
ठाढ़ भेल हम कनगीपर छी
पैरमे कंकड़ काँट गरल अछि।।
होश-हबास नञि छी हताश हम
लोक जजातक खअर बुझइए।
स्वार्थी सम्बन्धी सभ रूसल
किछु माङत सएह बुझइए।।
साहस संग संकल्प जुटाकऽ
कोहुना जीबि रहल छी।

भवन-भूमि नञि देलनि विधाता
फाटल सीबि रहल छी।।
सावन प्यासल भादो प्यासल
तरसै चान इजोरिया लेल।
कृष्ण-कर्मकेँ व्यवसायीगण
कृष्णपक्षसँ रखनेमेल।।
कन्नीके इजोतक कारण
हमर घर अन्हार रहइए।
भेटल अछि उपहार गरीबी
जीवन हमर पहाड़ लगैए।।
अपन लहाश अपने कनहापर
कोहुना उघि रहल छी।
श्मशान आब कतेक दुर छै
से नञि बूझि रहल छी।।
के जराओत एहि लाश खासके
एहि बातक अछि चिन्ता।
उगल चान नञि; रहल अन्हरिया
जेकरे छल सिहन्ता।।
हमर देह ई जरतै जहिया
के कनतै केकरा छै नोर।
मरिते नाम निपत्ता हेतै
नञि देखबै हम सुन्दर भोर।।
बेटी हमर रूप के रानी
बापे हुनक रुपैया हीन।
घटक मुँहपर थुकि दैत छल
देत कथी ई दुखिया दीन।।
देह आत्मा बेचिकऽ केलहुँ

जे छल एकटा कन्यादान।
दशो दिशा अन्हार लगैए
कहिया होइत नवल विहान।।
बेटीके छनि उजरल नैहर
सासुर छनि लचरल लाचार।
भाय एको नञि बहिनमे असगर
ब्रम्हा लिखलनि ब्रम्ह विचार।।
हम समाजक नजरिमे दोषी
दोषी हमर गरीबी।
हम अभिशापित हाथ मलै छी
के छथि हमर करीबी।।
बुरिबक लोक बुरिबक बुझइए
कबिलाहा फेकइए थूक।
साधनहीन गरीब बुझिकऽ
सम्बन्धी लए जड़बए ऊक।।
रंग बीच बेरंग रहै छी
फगुआ आओर दिवाली।
दुनियाँ जखन भुलाएल रहइए
विषवाला मधु प्यालीमे।।
महा भोज होइए समाजमे
हम रहै छी भूखले।
रोटीपर नञि नोन जुरइए
हाथ रहइए सुखले।।
छी समाज केर छोटकी भौजी
छेड़-छाड़ अपमान सहक लेल।
हमहींट टा उपयुक्त मात्र छी,
नोनगर करुगर बात सुनक लेल।।

जीवन दीप मिझाएल हमर अछि
कोयलीक बोली करुगर भेल।
स्नेहक बाती खाक भेल अछि
आब दीपमे नञि तेल।।
मन करइए त्यागि देबक लेल
रिश्ता एहि संसारसँ।
महा सेजपर महानिन्दमे
शयन करी अधिकारसँ।। ❑

हम की करब

भीषण हमर प्रतिज्ञा मैथिल
शब्दक नञि नोकसान करब हम।
जिनक चरित्र चान सन चमकनि
तिनके टा गुणगान करब हम।।

कलम हमर हाथो हमरे अछि
चोरक किएक बखान करब हम।
जेकर चालि कारी कुक्कुड़सन
तेकरो किएक मखान कहब हम।।

माला मंच मान के बुझियौ
केकरो किएक सम्मान करब हम।
कला दक्षता जेकरामे नञि
तेकरा किएक महान कहब हम।।

जे ढ़ेल फोरबा माटिक ढेपा
तेकरा कोना चेखान कहब हम।

जे रसज्ञ रस के ज्ञानी छथि
हुनके टा रसखान कहब हम।।

मैथिल शिष्ट विशिष्टसँ विनती
सुनियौ कने हरान करान हम।
छलमे छेद केलक नञि कहियो
ओकरा केना रुखान कहब हम।।

घास पात उपजलै मिथिला
ओकरा काटि ओरान करब हम।
कादो करब घास के गारब
अगिला खेती धान करब हम।।

मरुआ जकाँ मिरेला मैथिल
तखनो किएक अकान बनब हम।
सभ दिन बुरिबक बारल हमहीं
पात्र देखि मतदान करब हम।। ❑

हम धनि छी प्यासल

नारी हम कोमल-कमल
मनमे बहुत दरारि।
मारक मारि सहब दुष्कर अछि
कामक उठल बिहारि।
तोयद् तोय विहिन पहुँ छैथ
तोयज् के नञि आशा।
नोरे बोरल जीवन-यौवन

पूरल नञि अभिलाषा ।।

बहिना वाम विधाता ना ।
पावस हमरो नयन समाएल
नेह मुदा अछि प्यासल।
पुरुष पहुँ छथि बिसरल हमरो
हम धनि छी हरिवासल।।

बहिना वाम विधाता ना
रहल वसन्तो रुसले हमरो
पतझाड़क अछि आशा।
पूजल देव पितरकेँ बहुतो
सभ केओ देलनि दिलाशा।।
बहिना वाम विधाता ना।।

यौवनसँ हम परिपूरीत छी
पहुँ छथि काठ कठोरे।
निष्ठुर परूष पहूँ बनि बैसल
रखने धनि के दूरे।।
बहिना वाम...
बहिना वाम विधाता ना।।

सावन प्यासल भादो प्यासल
हमहूँ धनि छी प्यासल।
आब पहुँ जँ नञि घर औता
यौवन हमरो भासल।।

कतेक सहब हम पूर्वा पछबा
पवन बहए उनचासे।
सुखल नेहक गागर हमरो
यौवन मधुघट नासे।।
बहिना वाम विधाता ना...।

नारीक जीवन नरक हमर अछि
जरल हमर मधुमासे।
पहुँ प्रेमक बन्धनमे बान्हल
हमर पहुँ छथि पाशे।।
बहिना वाम विधाता ना...

सख सिहन्ता पूर भेल नञि
गेला विधाता गामे।
हमर विरंची महाप्रपंची
भए बैसल छथि वामे।।
बहिना वाम...। ❑

उमरल नेहक धार

प्रणय निवेदन सुनियौ यौ
प्रेम जगतमे सार छै।
सावन एलै फुटल छै मधुघट
रस के बहल टघार छै।।

सोलह सिङार बतीस अभरनपर
मारक भारी भार छै।

वृन्दावनमे व्याकुल अलिकूल
रसपानक लेल ठाड़ छै।।

मन्मथ मदन मानिनी कामुक
प्यासल बहै वयार छै।
सावन सनक नयन बरसइए
उमरल नेहक धार छै।।

काननमे कोयली कानइए
कानब नञि उपचार छै।
प्रेमक अर्पण करै छी पहुँ यौ
प्रेम पैघ उपहार छै।। ❑

मिथिला राज केना लेब

मिथिला राज लेबै? तँ आउ
लोरीक के किछु फूल चढ़ाउ।
बदलि दियौ निज दूषित विचार के
बिना आँच नञि सिझत दालि।
पुरिया बान्हि जेबीमे राखल
आउ काल्हि हम देब निकालि।।
शलहेसक गहबरमे चलियौ
सलहेसोकेँ फूल चढ़ाउ।
मिथिला...
किछुए लोक अराज छथि जे,
मिथिलामे मैथिल कहबै छथि।
हमहुँ मूल मैथिल छी एकटा
हमरे टारिकऽ कात करै छथि।

नैतिकता मर्यादा रखियौ
हमरो उचित सम्मान दियाउ
मिथिला...
एक सूत्रमे बानहूँ मिथिला
मिथिला के परिवार बनाउ।
राखू नैतिकता निज मनमे
अनकर अंश महज जुनि खाउ।।
सकल विभूति के एक बनबियौ
सकल सकल केँ मान दियाउ।
मिथिला राज...
माङनसँ मङियौ किछु शिक्षा
होउ विनित देता ओ दीक्षा।
महज महान ओ लेता परीक्षा
चरणमे हुनका शीश नमाउ।।
बंठा वीर सन उदित सूर्य के
दीना भद्री के गोहराउ।
मिथिला राज...। ❑

हम मैथिलक झरूआ छी

मैथिल छला हमर पूर्वज सभ
हम मैथिल के झरुआ छी।
टाका पैसा के अभावमे
कनिञा के मुँह जरुआ छी।।

धोती पहिरक लुरि रहल नञि
हम छी मैथिल ज्ञानी।
बलजोड़ी मैथिल कहबै छी

काटि रहल छी चानी।।
बाजै छी अंग्रेजी, हिन्दी
अंग्रेजी के भरुआ छी।
टाका पैसा...
कनिञा...

हम मैथिली शुद्ध लिखब से
मुदा आब ओ ज्ञान रहल नञि।
सुनब गीत उदासी सोहर
केकरो सक्षम कान रहल नञि।।
चाटि रहल छी पिज्जा बर्गर
तीत करैलक तरुआ छी।
मैथिल...
टाका...

मिथिलामे तिलकोरक तरुआ
अपने घर उपहासित अछि।
अंग्रेजी जापानी व्यंजन
भोजनमे परिभाषित अछि।।

ओलक चटनी हकन कनइए
हम मैथिल असगरुआ छी।
टाका...
कनिञा...।। ❑

सहब आब नञि अत्याचार

पटना खसत पैरपर हमरे
दिल्ली माङत दया केर भीख।
भीक्षा पात्रमे थुकि देबै हम
जँ मैथिल सीखता किछु सीख।।
पटना पैरकेँ पहिले तोड़ब
दिल्लीकेँ तोडब सभ दाँत।
प्रतिनीधि केर पेट बढ़ल अछि,
काटिकऽ छोट करब हम आँत।।
हम धरब नरसिंह रूप केर
सरकारक तोड़ब हम घार।
भूखले नञि गुणगान करब हम
चाही किछु रोजी रोजगार।।
सरकारो पोसने अछि चारण
हमरो अछि परिवारक भार।
बहुत सुनलियै अगड़ा पिछड़ा
सहब आब नञि अत्याचार।। ❑

स्वामी नञि हम सेवक चुनव

जन-जन केर सहयोग जरूरी
नवका किछु इतिहास गढ़ब हम।
सहब उपेक्षा कतेक दिन धरि?
नव धरती आकाश गढ़ब हम।।

सकल हाथ हो व्यस्त काजमे
रोजगारक किछु आश गढ़ब हम।
मरुवा जकाँ मिरेला मैथिल
अपनो लेल किछु खास गढ़ब हम।।

वीर विहीन नञि मिथिला धरती,
दुष्टक लेल गरोँस गढ़ब हम।
मोक्ष दायिनी मातृभूमि अछि
केकरो नञि उपहास सहब हम।।
मिथिलामे संसाधन कम नञि
उपनिवेश नञि वास करब हम।
कुम्भकरण केर निद्रा त्यागब
तखने अपन विकास करब हम।।

अधिनायकवादी सत्ताक
जखनहि बदलब नाश करब हम।
शुक्लपक्ष मिथिलामे रहतै
सभ दिन किएक उपास रहब हम।।

वीणाकेर स्वर पंचम सुनलहुँ
आब मुदा चन्द्रहास गढ़ब हम।
कलमवीर आओर कर्मवीर लेल
आयुध बहुतेरास गढ़ब हम।।

स्वामी नञि; हम सेवक चुनव
मिथिला के लेल दास गढ़ब हम।
एक सूत्र बान्हब मैथिल केँ
प्रेमक डोरी पाश गढ़ब हम।। ❑

गीत विकासक लगनी

सुच्चा मैथिल मिथिलाकेँ जगाउ यौ
पूर्वा पछवा पवनसँ मिथिला के बचाव यौ।।
दुष्टक नजरि नञि लागए मैथिल
मिथिला माटि मनोहर के।
धरती गगनकेँ पावन राखी
पुष्पित करु सरोवरके।।
गीत विकासक लगनी सोहर गाउ यौ।
सुच्चा...
कृषियज्ञ केर हवनकुण्डमे
मंत्र हो गहुम गीताकेँ।
धानवाण पढि रक्षा करियौ
मिथिला परम पुनीताकेँ।।
माटि हमर बेसी सभसँ उपजाऊ यौ।
लोरीककेँ हम नमन करै छी
सलहेसक मर्यादाकेँ
चण्डी चननिकेँ शत् शत् विनती
विनती जीवन सादाकेँ।
घर घर ज्ञानक वैभव दीप जराउ यौ।
सुच्चा मैथिल मिथिला...। ❑

नीनमे सुतल सरकार

आउ विमर्श करी मैथिलजन
जनमानस लाचार किएक छै?
संसद् आओर सरकार सेहो छै
बढ़लै अत्याचार किएक छै?

जागल भ्रष्टाचार मात्र छै
निन सूतलि सरकार किएक छै?
अपने पेट पहाड़ जेकर छै
कहबै पालनहार किएक छै?

बाट घाटमे वंचक बैसल
गोपुरमे प्रतिहार किएक छै?
बुधिविहीन भोथ शस्त्र लए
कहबै चौकीदार किएक छै?

लोक-लुभावन भाषण मिठगर
निपुण वैद्य बिमार किएक छै?
नगर नागरिक नोरमे बहलै
नैया खेवनहार किएक छै?

हमरो केओ काबिल जुनि बूझब,
कुण्ठित हमर विचार किएक छै?
मौलिक सभ अधिकार हमर छै
हमरे घर अनहार किएक छै?

सविधान संसाधन हमरो,
बैशखेबामे जाड़ किएक छै?

डेग-डेगपर करियौ धधरा
हमरेपर सभ भार किएक छै?

हथ उठाइ भोजन नञि करबै
घरमे राखल थार किएक छै?
आँखि कान ज्ञान अछि हमरो
फुसियाही परतार किएक छै? ❑

मैथिलक दशा

मैथिल छी माछी भिनकइए
मैथिल हमर घवाह बहुत छथि।
सत्य बात हमहुँ नञि बाजब
मैथिलजन खिसियाह बहुत छथि।।

बेरि बेरि विवाहक बादो
मैथिल मुदा तवाह बहुत छथि।
स्वयंवरमे भसियाइत बहुत छथि
कारण ओ भसियाह बहुत छथि।।

दूध मलाइ हमहीं सभ खाएब
किछु मैथिल जिबलाह बहुत छथि।
बात बजइ छथि गोरका बड़का
रखने सोच सियाह बहुत छथि।।

भोट करब अपने स्वजाति के
रखने मन मछाह बहुत बहुत छथि।
ढौआ देखि पिछड़ता बेसी

कारण ओ छिछलाह छथि।।

कथिक लेल ई मैथिली मिथिला?
मैथिलो मरखाह बहुत छथि।
साँपक उपनिवेश मिथिलामे
मैथिल हमर विषाह बहुत छथि।।

पोसा कुकुड़ ठकै छनि हुनका
पोसने कुकुड़ कटाह बहुत छथि।
पाँच बरिसपर दर्शन दै छनि
कारण ओ खरखाह बहुत छथि।।

बेरि-बेरि ओ ठका रहल छथि
कहबै ओ पुरूषाह बहुत छथि।
बुझब कोना हुनका छथि ज्ञानी
एखनो धरि ईर्ष्याह बहुत छथि।। ❑

देह मुदा दू दोबर छै

हम केकरोसँ बात करब नञि
हमरा केओ जुनि टोकब।
भैंस के हम कुड़हड़िसँ नाथब
खबरदार!नञि रोकब।।
हमर भैंस अछि राजनीतिमे
देहमे लागल गोबर छै।
दृष्टि ओकर दूर्वल छै बैसी
देह मुदा दू दोबर छै।।

नाइथि लैत छी तखन हेलेबै
तेकरा बादे खीचबै नाथ।
करुगर छी मिरचाइ के पिसने,
लगा देबै आँखि आओर माथ।।
हालहिंमे बच्चा जनलक अछि
गाभिन अछि पुनि सेहो।
हरियर घास खाइत अछि खूबे
बच्चापर छै नेहो।। ❑

बेरि-बेरि हम नमन करै छी

श्रद्धा-सुमन समर्पित सादर
सभ मैथिल सन्तान के।
नमन नम्र वन्दन अभिनन्दन
मिथिला भूमि महान के।।

लोड़ीक के हम नमन करै छी
कविवर श्रेष्ठ सुजान के।
शतानन्द के शत् -शत् विनती
अवर प्रवर विद्वान के।।

पाहुन के हम नमन करै छी
ब्रम्ह रूपमे राम के।
बेरि-बेरि हम नमन करै छी
कवि कोकिल के गाम के।।

चननि आओर सलहेशक विनती
महिसोथा अभिराम के।

मिथिला वंश वेलि के विनती
दिव्य देह निष्काम के।। 4

बंठा वीर सन उदित सूर्य के
मिथिला विमल विहान के।
महिष्मती के नमन करै छी
आओर अयाचीक ज्ञान के।।

दीना धन्य प्रणम्य देव छथि
नमन पुनौरा धाम के।
हम विदेह के नमन करै
कोमल पावन नाम के। ❑

अपने करू अपन उद्धार

आब संघर्ष अवश्यम्भावी
जल्दी बहतै रक्तक धार।
तखने मूल मैथिल जन पौता
जीवनमे रोजी रोजगार।।
चाइनक ऊपर पानि बहइए
सावधान सूतलि सरकार।
आब मान मर्दन नञि सहबै
चाही सभ वैधिक अधिकार।।
के भाषा के बन्हकी रखने
ओकरो आब करब प्रतिकार।
चन्द्रहास चमकतै जखने
तखने थम्हतै अत्याचार।।

सत्ता स्वयंवरमे सत्ताकेँ
फोरब लहठी छीनब सिङार।
सत्ता निज दायित्व नञि बूझत
नैया डुबा देबै मझधार।।
हमहुँ बना लेने छी मनमे
साधल उत्तम श्रेष्ठ विचार।
सिंहासन केर पलटि देबै हम
आब हाथमे लेब कुठार।।
सभ मैथिलसँ हमर निवेदन
अपने करु अपन उद्धार।
समतामूलक मिथिलाक लेल
अपनहि अपन बनू आधार।। ❑

हम जागल छी

हमरा केओ सूतल जुनि बूझब
जागल छी आराम करै छी।
मंथन मनन धर्मकेर चिन्तन
हम एखन व्यायाम करै छी।।
हम समाज संग सरकारक
सभ कला दक्षता देखि रहल छी।
के सेवक? के कुर्सी लोभी?
सूतले चारूधाम करै छी।।
हमरा केओ...
एखनधरि सभ ठकबे केलक
जीतने छल विश्वास जे सेहो।
बेरि बेरि कुर्सी बदलइए

प्रतिनीधि सरकारक सेहो।।
बेसी दिन केऔ ठकत कोनाकऽ
ठोकले ठामेठाम कहै छी।।
हमरा केओ...।।
घृणा द्वेष केर बात बाजिकऽ
परसइए उन्मादे बेसी।
नरपिशाच तूँ कान खोलि सुन
नञि रहतौ बेसी दिन ठेसी।।
के चलाक, के बुड़िबक बेसी?
बात सकल अभिराम करै छी।।
हमरा केऔ...।
अगड़ा पिछड़ा बहुत सुनलियै
कहियो कहाँ स्वाद चिखलियै।
जेकरा मोक्षक द्वार बुझलियै
तेकरा खाली भाँड़ देखलियै।।
मंच आओर पुष्पमालपर
हमहुँ आब विराम करै छी।।
हमरा केओ...।
सूतल छी हम आँखि खोलिकऽ
कुम्भकरण सन निन हमर नञि।
देह हमर दूर्वल पहिलहिसँ
पेट छोट अछि पीन हमर नञि।।
केकर खुसामद करब कतेक दिन?
केकरो हम नञि नाम करै छी।।
हमरा केओ सूतल...।। ❑

मिथिलाक मैथिली

मिथिला हमरे प्राण मैथिली
खाएत कोजगराक पान मैथिली।
विविध गीत केर तान मैथिली
भूषित आओर महान मैथिली।।

मैथिल केर अछि प्राण मैथिली
मिथिला के पहचान मैथिली।
सभ गुण केर अछि खान मैथिली
अछि पुनम के चान मैथिली।।

तीनहुँ तापक त्राण मैथिली
मैथिल केर अछि मान मैथिली।
समृद्ध आओर विद्वान मैथिली
भाषा अछि गुणवान मैथिली।।

केलनि अछि ओरियान मैथिली
करती आब कल्याण मैथिली।
खेती मषक मखान्न मैथिली।
हमर बढ़ौती मान मैथिली।।

शिव शंभूक वरदान मैथिली
ज्ञानी श्रेष्ठ सुजान मैथिली।
लागि रहलि झुझुआन मैथिली
मैथिल लेल विरान मैथिली।।

रोपब आओर उपजाएब मैथिली
मुदा काटि नञि खाएब मैथिली।
पढ़ब नित्य हम गाएब मैथिली
सपनोमे बतियाएब मैथिली।। ❑

अपनो कने विचारब

उझ्झट् बात कहै छी मैथिल
अपनो कने विचारब।
सम्मानक लेल अहींटा सक्षम
से नञि हम स्वीकारब।।
अपन मुँह देखू दर्पणमे
अही लेल की मिथिला राज।
आब प्रपंच केर छोड़ू मैथिल
बगरो आब बनल अछि बाज।।
उर्ध्व कूल आओर मूल अहिंके
थेथरैसँ चलतै नञि काज।
हमहूँ बजा सकै छी सभटा
जे कोनो बजबक छै साज।।
बरदसँ बेसी बुधिमान जे
तेकरे माथ मुकुट छै ताज।
मोह-मुक्त जे भेल नञि कहियो
तेकरे पूजै सकल समाज।। ❑

मन होइए त्यागि दी

वसन विहीन तन तरुणी कैँ देखिकऽ
मन होइए पीबि ली खौलैत इनहोर पानिकैँ।
आनी हम मखान पात पोछी अपन मुँह हाथ
आगिसँ जुड़ाली हम दग्धल चाइनकैँ।।

कुन्तल कोमल मुख कमल उरोज देखि
विषसँ भरल कोनो वनिता विषाइनकैँ।
अंगमे उमंग मार अनंग उघार देखि
मन होइए त्यागि दी विचार लाज आइनकैँ।।

लाजो अछि लाचार एतए विवश विचार भेल
चम्पा आओर जुही चमेली अंग मधुपाइन के।
काजरमे नहाली कालीख चुनकैँ लगाली हम
केस कान काटिकऽ भगा दी मिथिलाइन के।।

शशिमुख श्वेत जेना दुधमे नहाएल छलि
भूखसँ भूखाएल अंग अंग रधिकाइनकैँ।
आँखिसँ चुराबी काजर लाली हुनक ठोरकैँ
विषसँ भरल बेवहार रसिकाइनकैँ।।

पयोधर पुष्ट मुदा हिरणी नयन छलि
कोंढ़ी कचनार सन रूप रसिकाइनकैँ।
रूपक बाजार बीच कटि कुसियार सन
रस टपकैत अंग गोर गणिकाइनकैँ।।

गोंतमे नहा दी गोबर गालमे लगा दी
आओर आँखिमे लगा दी मिरचाइ मलिकाइनकेँ।
तरुणीकेँ तनक तरंग तमसाएल सन
पवन चूमि अंग के खेलाइत छल डायनकेँ।।

थूकि आओर खखारी मुँह वेशकेँ बिगाड़ी हम
पंक टीका गालमे लगा दी गिरथाइन के।
चीनी सन गोर रसगुल्लासन मीठ मुदा
हमहुँ भूखाएल आओर फँकने जमाइनकेँ।।

केस फहराइत आओर देह गमकैत छल
प्रकृति हँसैत देखि रूप धनिकाइन के।। ❑

हम संघर्ष करैत रहब

हम करैत रहब संघर्ष सतत्
अधिकारक लेल इजोतक लेल।
हम लेसि देब सगरो डिबिया
रक्षार्थ अपन; निज लोकक लेल।
हम पहिरि लेलहुँ परिकर कटिमे
अछि रक्त हमर नञि शोषक लेल।
हम कर गहने टकुआरी छी
विपरीत आँखिमे भोंकक लेल।।
भुजदण्ड हमर सक्षम एखनो
संकट केर वेग केर रोकक लेल।
अछि देहमे रक्त बहुते एखनो

उत्सर्ग करब नहि जोंकक लेल।।
हम मैथिल पुत्र हिमालय छी
भण्डार अमिय केर स्रोतक लेल।
हम बुन्द देब नहि जल केकरो
जल पेय हमर, नहि घोंकक लेल।।
अछि लीची आम मखान पान
मिथिले सन स्वर्गमे भोगक लेल।
मिथिलो नहि रहती सिथिला
छनि देह दिव्य नञि शोकक लेल।। ❑

दामी चुनरी

मेला घुमै चललि बहिन बुधियारि दुइ
वयस वसन्तक वयार बहि गेल छल।
चितमे चकोर चारु;मनमे मधुर रस
नयन दुधारी चन्द्रहास बनि गेल छल।।

कंचन कुमारी कचनार सन लाल ललि
कटि कंठ कंचन कलश बनि गेल छल।
प्रेमक पनार बीच कामक पियास लागल
कामिनी के कामक बोखार चढ़ि गेल छल।।

नारीक नितम्ब नाभि;पयोधर पुष्ट देखि
वायु वेग बहैत लाचार थमि गेल छल।
नयना निहारैत नयन अभिराम निज
मनक सुकमार भाव कुमारे रहि गेल छल।।

हाथमे रूमाल लाल विन्दिया विशाल भाल
कारी-कारी केश जनि जंघ के छुबैत छल।
ताबा सन तपैत देह, तनमे बोखार बेस
चातकी नयन निज तकैत शिकार छलि।।

कटि नाभी पेट पाँजर नितम्ब पहाड़ मार
सजल सजाओल बेश रूपक बाजार छल।
बड़की विचारिकऽबाजलि किछु कान लग
दुनू ठाढ़ भेली मनिहाराक दोकान लग।।

पुछल दोकानदार बहिन कहु की तकैत छी
सुन्दर सिङार साधन किएक नञि किनैत छी
चंचल नयन चकुआइत छलि चहुदिशि,
कामिनी बाजलि निज कन्तकेँ खोजैत छी।।

बहुतो वसन्त बितल कोमल शरीरमे
यौवन जरैत आगि खींचल लकीरमे।
हम सुकुमारि धनि धधकैत नारि छी
अंग अछि अङोर भेल बहैत बिहारि छी।।

तरल खमहाउर खाएब मेला बीच भीड़मे
लहकैत लाल लुत्ती चुनरी आओर चीरमे।।
अंग आगि आगि भेल; रस टपकैत अंग
खत्तामे नहाएब तावत ओकरे बुझब गंग।।

बहिन सम्हारि लियअ वयस बिहारिकेँ
करु जुनि शील भंग, तोड़ जुनि आड़िकेँ।

थालकेँ लगाउ जुनि, कोमल शरीरमे
दाग नञ लगाउ दामी चुनरी आओर चीरमे।।

पोखरि नहाकऽ राखू शीतल शरीर अंग
धरु मन धीर धनि नीकसँ नहाएब गंग।
चीत्त छहो छीत्त करब पंडित पुरानकेँ
पगड़ी आओर पाग छीनब जारब दोकानकेँ।।

सृष्टिकेँ सुडाह करब दहेजक दोकानकेँ
जारब दहेज लोभी बेटावाला शान के। ❑

तखने भेटत मिथिला राज

दलित दमित शोषित वंचित केर
सुनतै जे आवाज।
ओकर साधना पूर्ण हेतै
आओर भेटतै मिथिला राज।।
आब के बुरिबक रहलइ?
धरतीक लाल सुनलकै जहिया
शोषित केर आवाज।
शोषित देलकै अपन मनसँ
हाथ उठाकऽ राज।।
आब चलाक कहु केकरा कहबै?
उपरेमे नञि अल्हुआ फड़तै
शोषित बनलै बाज।
जे देतै सम्मान ओकरा किछु
तेकरे भेटतै ताज।।

कहु किनका छनि पौरुष?
आश्वासन नञि सिंहासन लेब
हमर बात सुनियौ महराज।
वर्ग वर्णकेँ जखने छोड़ब
तखने बनत सकल केर काज।।
हम अपनाकेँ खोजि रहल छी
कहाँ? कतअ? हमर स्थान?
विनती बुधिहीन केर सुनियौ
मैथिल सकल समाज।
बूझि सूझिकऽ करू पुरष्कृत
तखने भेटत मिथिला राज।। ❑

मर्मक बात

मर्मक बात कहै छी मैथिल
ज्ञानक दीप मिझा रहलइए।
मानवता के मोल कहाँ छै
कुकुरे आाइ पूजा रहलइए।।
खेतमे उपजै द्वेष-दंभ छै
मनुखे मात्र कटा रहलइए।
आइ युधिष्ठिर केर दुर्योधन
धर्मक मर्म पढ़ा रहलइए।।
पामर के पावर भेटल छै
निर्लज ज्ञान लुटा रहलइए।
जन-जन के छै खोंट नेतमे
विष के वेल रोपा रहलइए।।
तुलसी फूल आओर अर्वा उसना

सभ संयुक्त कुटा रहलइए।
नैतिकता केर धर्मयुद्धमे
गंगापुत्र पिटा रहलइए ।।
मंदिर मस्जिदमे प्रसाद कहि
फुसियेँ बात बँटा रहलइए।
राजनीति स्वादिष्ट घासकेँ
चोर सिपाही खा रहलइए।।
द्वेष दंभ छल कृषि यज्ञमे
दुष्टे सभ उपजा रहलइए।
पापी नीच प्रपंची लोभी
स्वार्थक सेतु बना रहलइए।।
स्नेहक स्रोत सुखल छै जेकरो
कौशिल्या कहबा रहलइए।
कंश कसाइ आओर कालनेमि मिलि
नगरपाल कहबा रहलइए।।
चरण आचरण शिष्ट जेकर नञि
सजन श्रेष्ठ कहबा रहलइए।
बौआक माय ठोकि बौआकेँ
भूखले पेट सुता रहलइए।। ❑

व्याकरण विष लगैए

हम इजोतक बात करै छी
मुदा अनहारे नीक लगैए।
समतामूलक मैथिल मिथिला
हमरा बहुते तीत लगैए।।
पाग पहिरि पावन कहबै छी

भ्रष्टाचारे मीठ लगैए।
श्रेष्ठ बुझै छी पंचम स्वरकेँ
गर्धप बाजब गीत लगैए।।
अपना मनसँ भाषा विद् हम
महज व्याकरण विष लगैए।
हम रटन्त विद्या केर मालिक
लेकिन व्याख्या कहाँ अबइए।। ❑

संकट मोचन

सुच्चा मैथिल ललकारि रहल।
सिंहासन अछि परतारि रहल।।
चाही हमरा किछु रोजगार।
हम सहब आब नहि अत्याचार।।
हम सभ मैथिल के करब एक।
छी हरा देने हम बुधि विवेक।।
हम छी मिथिला केर क्रान्ति दूत।
हम छी सुच्चा मैंथिल सपूत।।
अछि सभ मैथिल केर एक वेद।
हम मिटा देब जाति केर भेद।।
सुच्चा मैथिल संकट मोचन।
मिथिला केर उद्धार करत।।
पाग देखि जे नहि डरल ओ
दुष्ट देखि पगड़ी डरत।।
सुच्चा मैथिल केर अभियान।
पगड़ी रहतै महा महान।।
मिथिलाकेँ पड़ल इजोतक काज।

तूँ भाग दुष्ट अनहारक राज।।
अनहारक राजकेँ रोकक लेल।
उद्यत टकुआरी भोंकक लेल।।
सरकारक चोली देबै फारि ।
अश्लील अंगकेँ देब उघारि।
इ चलिते रहतै सतति अरारि।
की हमरा ओ सकत मारि?
ऐंठी ओकरे हम देबै झारि। ❑

हमहीं टा होशियार मात्र छी

साहित्यकार छला केओ दोसर
हम तँ चाटुकार मात्र छी।
वल-पौरुष बाँचल नञि किछुओ
फुसिञाही के क्षात्र मात्र छी।।
साहित्यकार छला केओ दोसर
हम तँ चाटूकार मात्र छी।।
बापक नाम बेचि विश्वमे
लिखने फुसिञे शास्त्र मात्र छी।
कतेक दिन हम ठकबै केकरो
हम धरतीपर भार मात्र छी।।
साहित्यकार छला केओ दोसर
हम तँ चाटूकार मात्र छी।।
जननी जानि करै छी सेवा
मुदा लेब हम सेवा शुल्क।
पात्र बनब दुष्कर बेसी अछि
बेटा हम कुपात्र मात्र छी।।

साहित्यकार छला केओ दोसर
हम तँ चाटूकार मात्र छी।।
भव्य-भवन मिथिला धरती छलि
केलहुँ दूषित परिवेश ओकर।
जननीक आँचर फारि बेचै छी
विद्या छल पहचान जेकर।।
भाषा भूषित छल मिथिलाकेर
सुखलाहा हम धार मात्र छी।।
साहित्यकार छला केओ दोसर
हम तँ चाटूकार मात्र छी।।
कहु सर्वतोभद्रे मिथिला
कोना भेल छी खंडहर।
सिंहासन सत्ता केर लोभमे
हमहुँ भेलहुँ छुछुन्नर।।
हम प्रपंची पातकी पामर
भोथहा हम हथियार मात्र छी।।
साहित्यकार...
दृष्टि दूषित; हम दुष्टशिरोमणि
मैथिलकेँ बूझै छी आन।
चरणकेँ वन्दक चारण छी हम
दृष्टिकोण अछि हमर अकान।।
छी कलंक मिथिलाकेर हमहीं
हमहीं टा होशियार मात्र छी।
साहित्यकार छला केओ दोसर
हम तँ चाटूकार मात्र छी।। ❑

कौआक पनचैती

कौआ केर पनचैती बैसल
पहीरि पाग अछि निर्णय भेल।
जनसेवाकेँ काज करि किछु
सत्ता लेल शतरंजक खेल।।
विष्ठापर अधिकार हमर अछि
विष्ठा पौष्टिक च्यवनप्राश।
लड़ि लड़ाकऽ खेलहुँ सभ दिन
गिद्ध नीतिपर एखनो आश।।
लोक कहाँ अछि बाँचल बुरिबक
जे सुनि लितए बात हमर।
बुझलक हमर चलाकी सभटा
सावधान अछि गाम नगर।।
एक मात्र मार्ग अछि बाँचल
भाषापर किछु काज करी।
हम चलाक छिहें पहिनहिसँ
मिथिला राजक नाम धरी।।
हम कौआ मर्मज्ञ ज्ञानकेर
मुखिया मात्र रहब हमहीं।
ज्ञानक मात्र एक ठिकेदार हम
बाँकी सभ कनहा कनही।।
गुदा मार्गसँ बाजि रहल छी
गुदा मार्ग अछि देवक देल।
झुठ साँच किछुओ हम बाजब
करब चलाकी सत्ता लेल।।

हम किनको मैथिल नञि मानब
मैथिल मात्र हमर खनदान।
बाँचल आब प्रपंचेटा अछि
पापी पेटक करी निदान।।
हम छी दागल साँढ़ प्रतिष्ठित
ढ़ेकरब अछि भाषाकेर मानक।
हम जे लिखलहुँ सत्य शुद्ध अछि
अछि अशुद्ध लिखल जे आनक।।
हम मैथिल छी महा मनस्वी
मिथिलापर हमरे अधिकार।
हमर दुष्टता जग जाहिर अछि
मिथिलाकेर हमहीं रखबार।।
घर्मक आड़िमे बैसि खेलहुँ हम
मलपुआ घृत आओर मलाइ।
दुरूपयोग केलहुँ क्षमताकेर
सत्ता छलि हमर भौजाइ।।
धर्मक नेता मिथिलाक नेता
सभ दलकेर हम नेता छी।
बुरिबक लोक बात नञि बुझए
हम ज्ञानक विक्रेता छी।।
हम अनाथ छी,जगन्नाथ नञि
रूसली हमर अपन भौजाइ।
एकबेरि पुनि चालि चलब हम
मिथिला राजक देब दोहाइ।। ❑

मिथिलाक गरिमा

मिथिलाञ्चल विश्वमे
ज्ञान गरिमाक धाम छल।
सभ्यताक विस्तृत क्षेत्रमे
विद्वताक ठाम छल।।
नैतिकता केर बनिञा
जखनहि नगरमे जन्मलेल।
मिथिलाक संस्कृति संग पाण्डित्य
तखनहि विलुप्त भेल।।
विद्वताक स्थान ग्रहण कएने
शराब अछि।
मानवता के माथपर
राक्षसताक दबाब अछि।।
समाजमे दहेजक आदान-प्रदान
प्रतिष्ठाक मापदंड अछि।
मानवता संग सामाजिक एकता
भेल खण्ड-खण्ड अछि।।
चौक चौकपर ज्ञान बिकाइए
पानक मात्र दोकानमे।
मनुष्य मात्र जन्म लैत छथि
महल आलिशानमे।।
वेद शास्त्र सभ हकन कनै छथि
शून्य श्मशानमे।
नीति आदर्शक दाम देखू
चाहक दोकानमे।।

वेदक चर्चागाह बनल अछि
गामक सभ मधुशाला।
युवक रूपके सजा रहल छथि
पहिरकऽ मुण्डक माला।।
पश्चिमी सभ्यताक छटाकेँ देखू
तरुणि वयसकेँ वालामे।
मैथिली-मिथिला दहा रहल अछि
मधुशालाक नालामे।। ❑

हमर व्यथा

हमर व्यथा एकलव्य सनक अछि
हारल आओर झमारल।
कतेक दिन रहबै हम वंचित
जियब उपेक्षाक मारल।।
अंगुठा पहिनहि काटल गेल
हम ग्रसित छी कुण्ठासँ।
रखने छी हम प्राण देहमे
की आशा उत्कण्ठासँ।।
ठण्ठ बूझि कण्ठ के कटला
चण्ठ छला गुरूदेव हमर।
लण्ठे आखिर भेला किएक ओ
पामर छल की सभा सगर।।
हम अपन सर्वस्व लुटा देब
आब अंगुठा देब मुदा नञि।
सावधान हे गुरूवर हमरो!
अहुँ अंगुठा लेब मुदा नञि।।

एक हाथक अछि कटल अंगुठा
एक हाथक अछि बाँचल।
पौरुष पामर जाग दुष्ट तूँ!
आब दिमाग किछु नाँचल।।
गुरुवरकेँ न्यायिक चरित्र,
आओर रक्त चरित्रमे खामी।
तँए हमर अंगुठा कटलनि
प्रतिभा छल जे दामी।। ❑

सावन बीति रहल अछि

बहिना सावन बीति रहल अछि
एकसरि हम धनि विरहिन।

महुआ आम मजरिकऽ झरलै
तरसि रहल मन मीन।
रूष्ट विधाता वामे बैसल
शशिमुख हमर मलीन।।
बहिना...

तन-मन प्राण घवाह सनक अछि
नियति भविष्य कटाह हमर अछि।
प्रियतम परदेशी पहुँ दूरे
यौवन तेज विहीन।।
बहिना...

भूलुण्ठित गुम्फित अछि कुन्तल

करूणानिधि छथि निन।
मधुमातलि मदमातलि प्यासलि
बाजै विरहक बीन।।
बहिना...। ❑

मैथिल के?

माछी मैथिल मच्छर मैथिल
मैथिल मिथिलाक पवन वसात।
घास पात सेहो अछि मैथिल
काँटक सहित मखानक पात।।

चूड़ा दही चीनियों अछि मैथिल
तरुआ आ तिलकोरक पात।
अँमट अँचार सेहो अछि मैथिल
तुलसीफूल गमकौआ भात।।

पौरूष पाग मैथिल मिथिलाकेर
मैथिल मिथिलाक अन्न जजात।
चोटी चानन दाढ़ी मैथिल
मिथिलानी केर मिलन मिलाप।।

चौरचन मैथिल अदरा मैथिल
मरुआ मैथिल पान मखान।
हमर विवाहक पद्धति मैथिल
कवि कोकिलकेर गीतक तान।।

लगनी मैथिल झिझिया मैथिल
मैथिल मिथिलाक कन्यादान।
बाट चलैत बटगवनी मैथिल
मैथिल उगल कोजगरा चान।।

मुङरी माछक महको मैथिल
मैथिल छल बलचनमा।
ललचनमा अछि असली मैथिल
मैथिल अछि फूलचनमा।।

धनिकलाल मन्डल केर मिथिला
मिथिला अछि शलहेशक
सबसँ सुन्दर रसगर मीठगर
भाषा हमरे देशक।।

संस्कार संस्कृति मैथिल
मैथिल हमर प्रकृति।
हमर रजोखरि पोखरि मैथिल
हमर महीपक कृति।। ❑

सपनामे हम देखने छेलिऐ

धरती पर जमीन नञि भेटल
किछु आकाशमे रोपने छेलिऐ।
मिथिला राजक दिव्य रूप के
सपनामे हम देखने छेलिऐ।।

समतामूलक राज छलै ओ
अपन नयनसँ नपने छेलिऐ।
लाल लाल फल गाछमे लागल
मीठ छलै फल; चिखने छेलिऐ।।

कोनो क्षेत्रमे चोर छलै नञि
केकरो बहसल ठोर छलै नञि ।
परिजन पुरजन एक छलै सब
शिष्ट समाज के गढ़ने छेलिऐ

जाति भेद नञि; ज्ञान भेद छल
संविधान हम पढ़ने छेलिऐ।
जाति मात्र मैथिल मिथिलामे
ब्रम्ह सूत्रसँ बन्हने छेलिऐ।। ❑

मिथिला महात्म्य

माटि-पानिसँ बनल घर अछि
ममतासँ छारल परिवेश।
स्वर्गक कामना छोड़ू मैथिल
धन्य-धन्य अछि मिथिला देश।।

कोनाकऽ बिसरब हम गजहारा
कोनाकऽ बिसरब सपूत उमेश।
वाचस्पति-विद्यापति धामकेँ
तेजिकऽ जाएब कोना विदेश।।

जोगी जनम लेबक लेल आतुर
जाहि धाम केर जनक नरेश।
जाहि धाममे सुग्गा वैदिक
थिक पुरातन मण्डन देश।।

अभिनव अछि जिनक पहिराबा
पैघ शिखा आओर रूप नरेश।
पनिहारिन बजैत संस्कृत अछि
पहरामे बैसल नागेश।।

जन्मल छथि एहि दिव्यभूमिमे
कवि-कोकिल, लोरीक-सलहेस।
आएल छलि आदि जगदम्बे
बेटी बनिकऽ मिथिला देश।।

सहजहिं सभ सहेजिकऽ राखब
मधुरी बोली मैथिल भेष।
मर्यादित भाषा वैभव अछि
भव्य-दिव्य अछि मिथिला देश।। ❑

गोत्र अछि विद्वानक हमरो

हम छी सुच्चा मैथिल भैया
शिष्टक हम सन्तान यौ।
हमरे पौरुष पर मिथिलामे
होइ छै साँझ-विहान यौ ।
देखु आइ उपेक्षित हमहीं
हम छी एखनो बारल ।
माँ मैथिली सेवक हमहीं
एखनोधरि छी टारल।।
करु हमर पनचैती भैया
हम जनकक सन्तान यौ।।
हम कृषक छी पान मखानक
हमहीं मरुआ धानक।
हमरेमे सलहेशक पौरुष
वंशज महा महानक।।
गोत्र अछि विद्वानक हमरो
सहब कतेक अपमान यौ
हमरे पौरूष पर...।।
कवि कोकिलक लेखनि हमरे
लोरीक के लाठी सेहो।
बण्ठा वीरक वल हमरामे

दीनासन हमरे देहो।।
हमहीं दीना हमहीं लोरीक
सब गुणकेर हम खान यौ।
हमरे पौरुष पर...।
बहिन चनैनक धरती मिथिला
पोखरि कमल फुलाएल।
सलहेशक फुलबारी सींचल
स्वर्ग उतरि छल आएल।।
सीता सतवर्ती के हमरो
भेटल अछि वरदान यौ।।
हमरे पौरुष..
गीता पर चिन्तन अछि हमरे
कृषि कर्म नगरे नगरे।
गहुम गीता धान वाणकेर
पाठ करि डगरे डगरे।।
व्रम्ह भेला याचक मिथिलामे
पाहुन छथि श्रीराम यौ।।
हमरे पौरुष...
पूर्वज हमर केलनि हरवाही
उपजल बेटी सीता।
बढ़ल मान मिथिलाकेर तखनहि
पावन परम पुनीता।
हमरे पूर्वजकेँ भेटल छनि
शिव शंभुक वरदान यौ।
हमरे पौरूष...। ❑

देखब हम सासुर केर भाड़

देखब हम नौआ
कुचरै छल कौआ
तपन बुझायब नयन जरै छल ।
नौआ संग के देवर बौआ
 केहेन पालकी केहेन कहार ।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

दिन बितै छल
युग सन सजनी
काल समान छल दिन आओर रजनी
भेल बलाय छल यौवन भार
देखब हम सासुर केर भाड़....

कञ्चन नुपुर नव वस्त्र पहिरब देख
पहुँन केर नयन जुड़ाएब
छल प्रतिक्षा बहुँत दिनसँ
मनमे सोचने छेलौं से पाइव,
हृदय बहै छल गर्म वयार ।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

मन छल विकल नयन छल पियासल
नञि कऽ सकै छेलौं हरिबासल
विष बढै छल बेसुमार ।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

प्रियतम भेल छला सम दुतिया

प्यासल मन छल आएल सेवतिया
जीवनमे नञि छल किछु सार
देखब हम सासुर केर भाड़....

देह जरै छल विरहानलमे
अस्य पीड़ छल मर्म स्थलमे
हृदय सूखै छल जेना पथार
देखब हम सासुर केर भाड़....

मन भयभित रहै छल
सदखन आँगनमे
आओर भीतर-बाहर
नित मंजन करैत छेलौं हम
काटिकऽ दँतमनि भाँटी आओर साहर
नञि भावै छल वादय सितार ।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

कमल सदृग तारुण्य कोमल
छल वेश भेल छल कुसुम समान
मारि रहल छला युवकगण सब
बाट धाटमे नयनकेँ बाण
नञि कऽ सकै छेलौं प्रतिकार ।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

भैया - भौजी देखवैत छला
हरदम हमरा अपन गुमान
हम सोचैत छेलौं कहिया आओत
हमरा जीवनमे नव विहान

पिता करै छला
वचन प्रहार ।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

परसब हम अपना टोल-पड़ोसमे
खीर मिष्ठान आओर पकमान
हृदय करै छनि स्वागत हुनकर
पहिरब हम नव-नव परिधान
तुकि लेबऽ बाजऽ कहार ।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

रंग विरंग तरकारी तरि कऽ
करबनि हुनक खतिरमान
छत्तीस व्यंजन सजा देवनि हम
कते खेता अतिरिक्त मेहमान
मंगल गाबि रहल अछि मनुआ
हृदय भेल अछि जेना पहाड़ ।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

शास्त्र पुरानक उक्ति कहै छथि
पहुँ होइय परमेश्वर
हमरा नञि चाही अलंकार
ओ स्वयं छथि रत्नेश्वर
आँचरसँ हुनक डगर बहारब
रचि रचि सोलह श्रृंगार
देखब हम सासुर केर भाड़....

मन-वीणा केर तार टूटल छल
गरमीमे लागै छल जाड़
बेली पुष्पसँ सेज सजायब
आँजू पहुँ संग करब विहार ।।
देखब हम सासुर केर भाड़.... ❑

मैथिलीक महत्व

मैथिली हमर खगता अछि
मैथिली हमर वेगरता अछि।
मैथिली हमर प्राण अछि
सब रोगक निदान अछि।।

मैथिली हमर मोक्षदायिनी
मैथिली हमर मातु जायिनी।
मैथिली हमर कान अछि
आँखि नाक आ मान अछि।।

मैथिली हमर सम्पत्ति अछि
मैथिली हमर जमीन अछि।
मैथिली हमर समृद्धि अछि
शान्ति कान्ति आ नीन अछि।।

मैथिली हमर ध्येय अछि
मैथिली पाथेय अछि।
मैथिली हमर गेय अछि
अमृत आ पेय अछि।।

मैथिली हमर ज्ञान अछि
विद्वताक सीमान अछि।
मैथिली हमर विमान अछि
मैथिली हमर अभियान अछि।।

मैथिली हमर आश अछि
मैथिली हमर विश्वास अछि।
मैथिली हमर वसन्त अछि
मैथिली हमर खास अछि।। ❑

केतए नुकाएल छी

कामिनी कंचन केर हम कानन ओझराएल छी
प्यासल और भुखाएल छी ना ।

पुरुष पहुँ बुझाए नञि छी बात
यौवन हरियर सनक जजात
पहुँ यौ गल्ती की भेल हमरा पर तमसाएल छी
हिरणी हम डेराएल छी ना...

हम नारी अहिंक नकारल
अहाँकेँ बुद्धि गेल अछि मारल
हम तँ मन्द सुगन्धित माला जकाँ सुखाएल छी
बाट किएक बिसराएल छी ना.......

हमरा बाँझीन लोक कहैए

नयनसँ झर्झर नीर बहैए
प्राण पहूँ कोन डायनक मायामे भुलाएल छी
चन्दा केतए नुकाएल छी ना...

अकिलक खोलू ने अलमारी
यौवन सजल फूलल फुलवाड़ी
हम तँ गंगा जलसँ माजल धोल पखारल छी
कुर्वक भाण्ड खराजल छी ना...

अहूँ समटि लियऽ सब भाभट
हमहुँ बिसरब बात विषादक
हमरा रोम-रोममे अहि मात्र समाएल छी
फुलक गाछ उखारल छी ना...

अहि छी पति हमर परमेश्वर
एहिमे बात ने किछुओ दोसर
हम तँ शरणागत छी चरण शरणमे आएल छी
ब्रत केने हरिबासल छी...

शत-शत नमन करू स्वीकार
किएक भेल कुण्ठित कुटिल विचार
हम तँ घघसल गहुँमक
पछवा पवन झमारल छी
सुखल और ठठाएल छी ना...। ❑

इतिहासक अनुपम पन्ना

इतिहासक अनुपम पन्नामे
घटना भरल अछि अनेक।
करमौलीमे रहि रहल छलि
मदनी नामक पिलिया एक।।
भूखसँ वेकल बेचारी पिलिया
चोरि करै छलि जूता।
देने जबाब छलै रानीकेर
अपन शरीरक बूता।।
एक दिन आएल घरमे
सहमेलु नवीन श्रीमान।
के छुअत हमर जूताकेँ
हुनका छलनि वेश गुमान।।
उचित स्थान राखु जूताके
मदनी लए चलि जाएत।
छुधा तृप्त नञि हेतै गरीबक
रुचि रुचि भोग लगाएत।।
हमर बातकेँ टारि महामन
फोलिकऽ जूता रखला।
आँखि मिरैत उठला भोरहिं तँ
जूता के नञि देखला।।
पाबि बुढ़ापाकेँ ओ बेचारी
व्याकुल घुमैत रहै छलि।
आहत तन आओर मनकेँ लए ओ
अपन मृत्यु मनबै छलि।

नेना उकाठी लएकऽ लाठी
ओकरा नित ताड़ैत छल।
मारि खाय लाठी पीड़ासँ
नोर नित बहबै छल।।
भरि जवानी केलक फुटानी
मद् मे मस्त रहै छलि।
देखितहिं चोर उचक्काके ओ
पस्त रेवाड़ि करै छलि।।
गामक बाँसक सघन बीटमे
पिलिया के छल डेरा ।
चामक जूता छल ओकरा लेल
बनल दूधक पेरा ।।
जूता चोरीक ई घटना
कइक बेर पहिलों छल भेल।
सुनिकऽ गामक वुद्धिजीवीगण
नाना रंगकेर उपमा देल।।
केओ कहै छल चोरक काज थीक
केओ कहै छल देवीक।
केओ कहै छल ई सभ किछु नञि
इ थीक काज फरेवीक।।
गाममे किछु उपनयनक बरुआ
छला बेस उताहुल भेल ।
करु उपनयन हमर यौ बाबू
वर्षक नीक शुद्ध बीति गेल ।।
नगर खलीफा महेन्द्र मिश्रजी
कुरहैरि कान्ह लेलनि सम्हारि।
गीत गबैत सभ पंचम सुरमे

चलली सुहागिन नगरके नारि।।
बाँसक बीटमे जाय पहुँचलनि
मंगल गीत समाप्त भए गेल।
पिलिया चाम चिबाबैत बैसल
बहुतों जूता ढ़ेरी भेल।।
जूता चोरिक सम्बन्धमे
किंबदन्ती मिथ्या भेल।
धाड़-धाड़ सब कहलनि मिलिकऽ
पिलिया बीटसँ बाहर गेलि।।
बाँस काटि गृहनगरमे लाबि
शीघ्रहिं मरबा ठाठल गेल।
सजबी दूधक दही पौरल
ओरिकासँ घृत परसल गेल।।
होइत समाप्त उपनयनक भोज
पिलिया पहुँचलि निज परम धाम।
ओकरा प्रति कृतज्ञ समाज अछि
लोक जपइए मदनीक नाम।। ❑

मुदा आब सभ जागि गेल अछि

मैथिली ज्ञान आओर शिक्षा-साहित्य
आई भेल अछि हरियर घास
साँढ़े मात्र चरैए जिनका
दुर भेल छथि मैथिल खास
मैथिली-मिथिला केर सपूत सभ
फाँकि रहल छथि घूरा,
सम्मानित होइ छथि ओ- बेसी

जे छथि लोक बेलुरा
विद्यापतिजी भेला खेलौना
किछु मैथिल छथि बेचनिहार ।
माँ मैथिली केर बेटा देखू
माइयक चीर हरण केनिहार ।।
पुरष्कार साकार होइत अछि
ऊँच हवेली राज निवास
माईट-पानि छोड़ि पुष्पित अछि
किछु मैथिल के कुल आकाश
अक्षर केर अछि ज्ञान ने कनिऔ
ओकरे झण्डा छइ फहराइत
लातसँ लत खुरदन होइ छथि
ठाढ़ भेल जे शिष्ट पछाइत
महा मदारी बजा रहल अछि
डमरू ओ झुन-झुन्ना
आगिमे ऐंठल जरा रहल अछि
दुष्ट शिरोमणि जुन्ना
मैथिली-मिथिला अछि अपियारी
सभ दिन फँसलै रोहु-बुआरी
मुदा आब सभ जागि गेल अछि
सभकेँ चाही माछ-बुआरी
महा-महत्व अछि पान-मखानक
उत्पादक के की स्थान
झनु-झुन्ना जे-बाजि रहल अछि
तेकरो कने सुनु श्रीमान।।। ❑

हमर मनोरथ

घर-घर बास करै छथि लक्ष्मी
सरस्वती चहुओर
साग गेनहारीक बारीक उपजल
लतरल अछि तिलकोर।।
अल्पाहार अछि दधि चिपटान्नम
बोली मधुर समान।
षटरस युक्त अँचार आमकेर
मिथिला भूमि महान।।
हमर मनोरथ अछि मिथिलामे
खेतमे हलसैत धान रहय।
घर-घर ईद दिवाली पूजा
हर मैथिल मुख पान रहय।।
देह वस्त्रसँ झाँपल देखी
जन-जन एक समान रहय।
उपनिवेश भूखक नहि देखी
हर घर मड़ुआ धान रहय।।
समतामूलक मिथिला देखी
करूणा ममता ज्ञान रहय।
जन-जन वेद पढ़थि सभ मैथिल
विश्व मंचपर मान रहय।।
हमर मनोरथ...।

मनन संग चिन्तनकेर चानन
सखम सबहक कान रहय।

कमल पुष्प देखी पोखरिमे
पसरल पान मखान रहय।।
ललन विष्णु ललना लक्ष्मी बनि
बेटी वीणा पाणि रहय।
घर-घर गीत सलहेसक लोरीक
विद्यापतिकेर गान रहय।।
हमर मनोरथ...।

जगत केर जननी बहिन जानकी केर
मिथिलामे मान रहय।
भावसँ बान्ही हम भव्याकेँ
विधिवत् ब्रह्म बन्हाएल रहय।।
कृषि-काननकेर यज्ञ करी मिलि
पावनि नित्य नवान रहय।।
मंच प्रपंचक नहि देखी हम
शीतल नवल विहान रहय।।
हमर मनोरथ...। ❑

Notes